पेशे लफ्ज (भूमिका)

श्री सूफी सुल्तान शाह साहस का नाम व इनकी करगाह आस-पास के कई जिलों में मशहूर हैं. सैंकड़ोंबरस गुजर जाने के बाद श्री यह भी यह श्री सूफी शाह साहब की मजार सरीफ हर तरह के उतार चढ़ाव देखती रही कभी आस-पास आबादी अपनी बुलंदियों पर रही तो कभी एकदम वीरानगी हो गई पर हजूर सूफी साहब पर कोई असर नही. कुराने करीम का इरसाद है कि अल्लाह के बलियों पर न कोई खौफ है न गम, आज भी यह हालत है कि जो शख्स मुहब्बतइखलासव एतवार से मुसीबत के वक्तआप को याद करता है तो आप उसकी मदद फरमाते हैं, यह सिर्फ दावा ही नही बल्कि हकीकत और प्रतिदिन की बात है. आपकी इतनी शोहरत के बावजूद आपके करम व बरकतों के बारे में कुछ नही लिखा गया. उर्दू के मुकामी अखबारों में इस सूफी संत श्री सुल्तान श्री साहब की दरगाह के बारे में अवसर छपता रहा है मगर हिन्दी में यह कमी महसूस हो रही थी. जब कि यहाँ अधिकतर लोग हिन्दी जानते हैं और सूफी संत सुल्तान शाह साहब व बाबा छैकूर वाले के बारे में जानना चाहते हैं. हुजूर सूफी साहब बाबा साहब की इनायत व करामत के बारे में लिखने की प्रेरणा स्व. श्री भाई आनंदस्वरुप ने दी थी फिर उसके बाद स्व. श्री रामलखन यादव ने मुझे कई बार कहा लिहाजा जनाब अब्दुल सलीम मुतबली दरगाह की आज्ञा से यह कुछ मुख्तसर बाकयाद हिन्दी में लिखे हैं.

उम्मीद करता हूँ कि यह कोशिश सूफी शाह साहब व बाबा साहब (दरगाह बाबा) के दरबार में मंजूर होगी.

प्रभू दयाल बाजपेयी

दरगाह हजरत सूफी सुल्तान शाह साहब

हर दर्द को मिली है दवा इनके नाम से,

देता है हर मुराद खुदा इनके नाम से।

कानपुर दिल्ली लाइन पर (शिकोहाबाद) एक बड़ा जंक्शन है जहां से फर्रुखाबाद के लिए रेल जाती है. स्टेशन से रेल की पटरी के किनारे फर्रुखाबाद की रेल पटरी पर चलें तो आधा किलो मीटर चलने पर नहर का पुल पार कर बाई तरफ देखेंगे तो दरगाह साहब दिखाई देता है.

दूसरा रास्ता स्टेशन से बाहर निकल शिकोहाबाद शहर की तरफ सड़क पर चलें तो बाजार खत्म होते ही नहर का पुल आता है उसे पार कर सीधी तरफ पक्की सडक नहर किनारे-किनारे जाती है. उसी सड़क पर एक किलोमीटर पर रेल नहर पुल आता है. दरगाह के लिये पक्की पगडन्डी आती है. अब तो यहाँ पर कई कमरे लोगों के ठहरने के लिए बन गए हैं.

श्री सूफी सुल्तान शाह साहब अपने समय के बड़े वली अल्लाह हुए हैं जिनकी दुआ और बरकत दारा शिकोह के समय से नौशरा' के नवाब हमदाना फैज और बरकतें

हासिल करते रहे और कई पीढ़ियों तक अपनी रियाया (जनता) के दिलों पर राज करते रहे. उस समय के सरकारी रिकार्ड में साफ लिखा है कि उस समय साल में यहाँ दो मेले लगते हैं. दोनों मेलों में लाखों लोग शिर करते हैं.

उस समय ही पास का गाँव किशनपुर मुहम्मदाबाद आबाद हुआ था.

समय पे पलटा खाया, आस-पास वीरानगी छा गई नौसेरा खंडहर हो गया पर सूफी संत श्री सुल्तान शाह साहब के करम से किशनपुर छोटा ही सही पर फलता फूलता रहा.

सन् 1938 में इस स्थान पर चारों तरफ ऊँची मूंज और गोखरू (एक तरह का कांटा) के कारण इस दरगाह के पास किसी का आना जाना नहीं हो पाता था। इस कच्चे मजार सरीफ के चारों तरफ मूज का जंगल फैला हुआ था कोई भी सोच नहीं सकता था कि यहां कोई मजार भी हो सकता है. चारों तरफ खेत पर पानी न होने के कारण एक दो फसल हो पाती थी. जंगली जानवर रात को इधर-उधर घूमते रहते थे. रात तो रात दिन में भी कोई इधर भूलकर भी नहीं आता था. गर्मी के मौसम में रेगिस्तान का माहौल होता था. दूर-दूर तक कोई पेड़ न होने के कारण इन्सान तो क्या जानवर भी इधर को मुंह नहीं करते थे. यह मजार सरीफ मूंजो के जंगल में छिप गई. पास के किशनपुर गाँव के कुछ परिवार जो सूफी संत में यकीदत रखते थे और चैन की सांस लेते थे. श्री सूफी सुल्तान शाह साहब का कच्चा मजार ऊँचे टीले पर छैकुर के पेड़ के पास मूंज के झुण्ड में छुपा हुआ था.

इटावा व उसके आस-पास के लोगों को अब्दल मजीद की मार्फत बाबा का छेकुर वाले

पहले आने वालों में श्री पं० बिहारी लाल मिश्रा, श्री पुत्ती लाल, श्री सहीद अहमद, सरदार उजागर सिंह, श्री रफीक अहमद खास थे. इनके साथ और कई भी लोग आते अपनी फरियाद सुनाते और खुशी-खुशी चले जाते पर ऊपर लिखे लोगों ने जब सूफी साहब के मजार के आस-पास मूल और कांटो का जंगल देखा तब उनके जगह की सफाई शुरू की और हर हफ्ते आते और दिन भर मेहनत करते और रात को शहर शिकोहाबाद मैन बाजार में श्री सहीद अहमद टेलर मास्टर (जो 1947 में पाकिस्तान चले गये) की दुकान में सोते. शहर के कई लोगों ने भी आना और सफाई में हाथ बटाना शुरू कर दिया। इन लोगों के खास थे श्री चांद मियां मेवा फरोश, पक्का तालाब शिकोहाबाद, मु० तारिक (उस्ताद) हाफिज जी और अब्दुल वारी थे. इन सबने दिन-रात कड़ी मेहनत कर थोड़ी जगह मजार सरीफ के आस-पास साफ की और वहाँ तक पहुँचने की पगडंडी बनाई। जब मजार सरीफ दूर से कुछ-कुछ दिखाई देने लगा तो आस-पास के लोगों का आना जाना शुरू हुआ और मुजावर श्री बुद्ध शाह को रखा गया, वह शाम के आते चिराग जला कर स्टेशन चले जाते क्यों कि उन्होंने या दूसरे किसी ने रात को रुकने की कोशिश की तो तरह-तरह से उनको डराया जाता, दिन को ठहरने का सवाल ही नहीं था क्योंकि आस-पास पेड़ ही नहीं था, धीरे-धीरे सफाई होती गई, बाबा का दरबार रात को लगता अब्दुल मजीद लोगों को मुसीबत, समस्या बाबा साहब के सामने रखते बाबा की दुआ और करम से लोगों की समस्या का समाधान होता. भीड़ बढ़ती गई, वीरानगी दूर होती गई. बुद्ध शाह सुबह आते, मजार शरीफ की सफाई वगैरह करते फिर आस-पास के गांवों में जाकर जो मिलता, लाते उसी से उनका गुजारा होता. धीरे-धीरे आस पास के सब लोग पीर बाबा के मुजाविर बधू शाह को आंखों पर बिठाने लगे. अब तो हालत यह हो गई कि वह जो दुआ करते कबूल होती.

एक बार इटावा के लोगों ने बाबा साहब से फरियाद की 'रात को यहां ठहर नही पाते हर तरह से डराया जाता है, यहां तक कि रात को यहां से भाग कर स्टेशन जाना पड़ता है. हमको यहां ठहरने की इजाजत दी जाए. इजाजत मिलने के बाद लोग रत को यहां ठहरने लगे. धीरे-धीरे एक झोपडी पड़ी.

महमूद शाह धातरी वाले बद्धूशाह के बाद मुजावर बनें उसके रहने के लिए कोई झोपड़ी भी नही थी, उनके लड़के चुन्नु जो उस समय 14-15 वर्ष के थे, उन्होंने नदी जो एक फलांग दूर है से मिटटी ला-ला कर तीन मोती-मोटी दीवारें बनाई और झोपड़ियाँ डाली. वही चुन्नु पुत्र ठेकेदार हैं, करोड़पति हैं.

नजरों से वो निहाल हो जाते हैं,

जो फकीरों की नजरों में आते है.

चुन्नु भी बाबा साहब की नजरों में आ गया.

इटावा के लोगों की लग्न व महंत से दरगाह दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की करने लगी. छायादर पेड़ लगने लगे, पानी के लिए कुंवा खुदा. बाबा साहब की आज्ञा लेकर मजार सरीफ पक्का बनाया गया, कमरा बना इन लोगों की हिम्मत लग्न देखिए, मजदूर एक भी नही लगाया गया.

एक दिन तय कर इटावा से सब लोग आते, दिन भर मेहनत करते. एक जगह खाना बनता, एक साथ बैठकर खाना खाते, रात को अपनी समस्याएं बाबा चेंकुरवाले के सामने रखते और जबाब पाते.

"कोई हिंदु न रहान मुसलमान" छेकुर वाले बाबा को यकीदत सभी धर्म पर हावी हो गयी थी.

जब साफ सुथरी दरगाह बन गयी तो लोगों ने कहा कि सूफी साहब रह का उर्स करना चाहते हैं, तारीख बताई जावे, तब पहली मई की तारीख बताई गयी. 1938, पहली मई का पहला उर्स हुआ. उर्स धीरे-धीरे मशहूर होता गया. वहां अब तो साधन पानी, बिजली आदि हैं.

हर वीरवार को हजारों यकीदतमन्द सुबह होने से पहले ही आने लगते हैं और आधी रात तक सिलसिला जारी रहता है. सूफी साहब सब की फरियाद सुनते हैं और मुरादें पूरी करते है. 1982 में पुराना छेकुर का पेड़ आंधी से टूटकर गिर गया, वह पेड़ चश्मदीद गवाह था जब यहां वीरानगी का राज था, इन्सान इधर आने की हिम्मत की पाते थे. हर मजहब के लोग यहां आकर सर झुका कर दुआ मांगते हैं. कुछ हजरतसूफी साहब से मिन्नत मांगते हैं कुछ चेंकुर वाले बाबा साहब से और सब की मुरादें पूरी होती है.

सालाना प्रोग्राम

दरगाह सुफी सुल्तान शाह साहब पर साल में चार प्रोग्राम होते हैं. जिससे विला तफरीक मजहब व मिल्लत हजारों आदमी रह. के मजारे अरदास पर हाजरी देते हैं. फातिहा पढ़ते हैं, दुआएं मांगते हैं, मिन्नत करते हैं और कामयाबियां हासिल करते हैं.

1. **1मई से 4 मई तक उर्स**:

सुबह 8 बजे उर्स का आगाज गुशल शरीफ से शुरू होता है, शाम 5 बजे मरहूम चाँद मियां मेवा फरोश के लड़के मुहम्मद शफी के घर कटरा मीरा के यहाँ से उर्स की चादर पाक उठती है अपने

सरों पर चादर उठाते हुए कब्बाल कब्बाली गाते हुए बाबा व हजरत सुफी साहय के यकीदतमन्दों के यहां होती हुई दरगाह आती है.

तारीख 2 व 3 को दोपहर और रात लंगर तकसीम होता है और राम कब्बाली होती है.

तारीख 4 को सुबह 8 बजे गुसल शरीफ कुल व कशली बाबा छेकुंर वाले के कमरे के सामने कब्बाली.

2. गुरुपूर्णिमा (अषाढ़ी पूनों) जुलाई माहः

सुबह चादर,दोपहर लंगर और रात को कब्बाली

3.कतकी पूनों:

सुबह चादर, दोपहर लंगर और रात को कब्बाली

4. बसंत पंचमी: सुबह चादर व कब्बाली,दोपहर लंगर और रात को कब्बाली

आज भी इन प्रोग्रामों में शिकरत फरमा कर हजरत सूफी सुलान शाह साहब पार्क के फैजे रुहानी से मुस्तफीज हों.

आजकल यहां पर हर प्रोग्राम यह लोग दरगाह शरीफ व बाबा साहब के भक्त है और अपने को उनको अर्पण कर चुके हैं उन्हीं लोगों की लगन, दिन-रात की मेहनत व हजरत सूफी सुल्तान शाह साहब व बाबा रेंकुर वाले के करम से सफल होता है.

श्री ठाकुर प्रताप सिंह

श्री बाबू विशम्भर नाथ कुमार

श्री महताब सिंह

श्री चन्दन सिंह

श्री मुहम्मद शफी

श्री रामवीर श्री रामदत्त

श्री चुन्नी लाल

श्री चेतन्य स्वरूप बाजपाई

श्री कुन्दन सिंह

श्री प्रीतम सिंह

श्री विजेन्द्र सिंह

श्री अमर सिंह

श्री अशोक यादव

श्री भोलानाथ वाथम

श्री कमलेश

श्री अशोक गोयल

श्री कोमल सिंह यादव

श्री जहीर खां

श्री मु.आरिफ उस्ताद कालड़का

श्री सलेटी सिंह

श्री कुन्दन सिंह

श्री किताब सिंह

श्री किशन सिंह

श्री अतुल मिश्रा (बोबी)

श्री मुकेश बाजपई (राजू)

श्री जगदीश

श्री आर. पी. सिंह

श्री अशाक यादव व उनके भाई

अब्दुल मजीद खाँ से पहली मुलाकात

अब्दुल मजीद खाँ कटरापुर दल खां इटावा में रहते थे. पी.डब्ल्यूडीमहकमे में सड़क कूटने के इंजन के ड्राइवर थे. उनकी ड्यूटी राजस्थान के सुनसान इलाके में थी.दिन भर सड़क कूटते रात को इंजन के पास ही सो जाते. इस तरह सुनसान जंगल में उनका जीवन बीत रहा था.

एक शाम काम खत्म कर इंजन के पास चारपाई पर लेटे वह कुछ सोच रहे थे. सब मजदूर पास के गाँव जहां वह ठहरे थे,जा चुके थे. एकाएक महात्मा उनके पास आकर खड़े हो गए. मजीद ने उनको जैसे ही देखा फौरन उठकर खड़े हो गए और झुक कर सलाम किया. बैठने को कहा,"बेटा कुछ खाने की इच्छा है,कुछ खिला" बाबा ने मजीद से कहा मजीद ने सकुचाते हुए कहा,"बाबा भूख तो मुझे भी लगी है पर मेरा खाना तो देर रात ठेकेदार के यहां से आएगा. तब तक आप आराम करो.

बाबा ने कहा,"अच्छा! तो पानी ला मैं खाना मंगाता हूँ,तब हम दोनों खाएंगे,-मजीद आश्चर्य से बाबा की तरफ देखने लगे और पास खड़े इंजन से पानी लेने गए. पानी,लेकर वापस लौटे तो देखा कि बाबा पीतल की बाल्टी से खाने की प्लेटें चारपाई पर निकाल रख रहे हैं. अब मजीद का डर के मारे बुरा हाल था,शरीर पसीना-पसीना हो गया. सोचा,यह कोई भूत प्रेत है,अब इससे पीछा कैसे छूटेगा.

मजीद को परेशान देख बाबा बोले "खा तेरे लिए मंगाया है. डर मत मैं भी इंसान हूँ. तीन तरह के चावल, रोटी, दाल सब्जी सब कुछ था.

मजीद ने जी भर खाना खाया ऐसा बढ़िया खाना उन्होंने पहले कभी नहीं खाया था. खाना खाकर बाबा बोले, '' अच्छा मियां अब मैं चलता हूँ, तुम आराम करो.''

खर्चा जो नौकरी के समय था अन्तिम समय तक वह ही खर्चा रहा. बाबा साहब ने उनके नाम एक बड़ी रकम बैंक में जमा कर दी थी पर मजाल कभी एक रुपया भी उसमें से लिया हो, साधा लिबास आधे बांह की सफेद कमीज व सफेद तहमद या पैजामा पहनावा उसका हमेशा रहा. बाबा साहब ने उससे जब भी कुछ मांगने को कहा तो उसने हमेशा यही कहा,"और कछ भी मुझे दरकार नहीं है, लेकिन मेरी चादर मेरे पैर के बराबर कर दे."

बाबा साहब ने उसे ऐसी तारीक अदा की कि अपने कमरे में उसे जगह दी, यह बाबा साहब का करम ही तो है अब्दुल मजीद का छोटा बेटा शिकोहाबाद के रईसों में एक है और मौजूदा दरगाह शरीफ के मुतवली हैं.

तामीर दरगाह में नींव के पत्थर

चांद खां जो पक्का तालाब शिकोहाबाद में रहते थे, मेवा बेचने का काम करते थे, अच्छा खाता पीता परिवार था. उन्हें ख्वाब में मूंजो के जंगल से घिरा कच्चा मजार दिखाई दिया, उसी ख्वाब के सहारे ढूंढते वह सूफी सुल्तान शाह साहब के मजार शरीफ पर पहुँचेऔर रोज शाम बिना नागा चिराग जलाने आने लगे, बाद को उन्होंने नौसेरा गांव जाकर उस समय के बुजुर्ग से जाकर पता किया तो पता चला कि यह मजार हजरत सूफी सुल्तान शाह साहब का है.

सर्दी, गर्मी, बरसात हर मौसम में शाम चिराग जलाना उनका नियम बन गया. मजार शरीफ के सिरहाने चिराग को हवा पानी से बचाने के लिए चार पांच ईटें उन्हीं ने लगाई थी. चांद मिया का चिराग जलाना उनके आखिरी दिन तक चलता रहा और आज हजरत सूफी शाह साहब व बाबा साहब के करम से उनका परिवार खुशहाल है और हर साल की तरह उर्स की चादर उनके घर से उठती है उनका बेटा मुहम्मद शफी सच्चा इंसान और दरगाह शरीफ के हर काम में जी जान से शरीक है.

मुहम्मद आरिफ़

शिकोहाबाद के ही मुहम्मद आरिफ़ थे लकड़ी की खरीद फरोख्त का बिजनेस करते थे, उस्ताद बड़े सीधे-साढ़े अल्ला परस्त इन्सान थे, हर बुराई से दूर, शहर के जाने मने लोगों में अपने सीधे स्वाभाव और सच्चाई के करण 'उस्ताद' के नाम से मशहूर थे. उनको अपने मौजूदा हालत पर संतोष था. छेंकुर वाले बाबा साहब की बहुत इच्छा थी कि वह कुछ मांगे पर वह ख देते एक तेरा साथ हमको दो जहां से प्यारा है, तू है तो हर सहारा है.

बाबा साहब का फोटो भी उनके पास था, साहब के कर्म व इनायत से वह जब तक जिए, दरगाह शरीफ की खिदमत में रहें और बाबा साहब का करम है कि अब उनका नाती उनकी तरह ही लकड़ा का बड़ा व्यापारी है, शहर में उसकी भी अपने नाना की तरह इज्जत और मान सम्मान है.

पंडित बिहारी लाल मिश्रा का रेलवे स्टेशन पर दूध,दहीऔर रवड़ीका ठेका था. अब भी उनके पोते अतुल मिश्रा के पास है, पंडित जी की जान पहचान लाला पुत्ती की मार्फत अब्दुल मजीद से हुई, लाला पुत्ती की स्टेशन बजरिया में पान बीड़ी की दुकान थी, जहाँ अब्दुल मजीद सिगरेट लेने आते थे, पंडित बिहारी लाल और पुत्ती लाल अब्बल मजीद के साथ शिकोहाबाद बाबा साहब के पास जाने लगे. पंडित बिहारी सीधे साधे धार्मिक विचारों वाले ब्राह्मण थे. पंडित बिहारी लाल का सिधाई और धार्मिक विचारों के छेकुर वाले बाबा साहब उनका बहुत ध्यान रखते थे. बाबा साहब से उन्होंने अपने ठेके से मुनाफा होने की फरियाद की तो बाबा साहब ने उन्हें एक पीतल की छोटी सी बाल्टी दी और कहा रोज इसे धोकर साफ कर धूप दिखाया करो. पंडित बिहारी को जब भी आमनदनीकम दिखाई देती वह बाल्टी को साफ कर धूप दिखाते, दूसरे दिन ठेके की आमदनी पांच गुनी बढ़ जाती है.

पंडित जी के घर में चौका बरतन करने एक स्त्री आती थी, एक दिन जब वह कम करने आई तो घर में कोई नहीं था. उसने सब बर्तन जमा किए और ऊपर अलमारी पर रखी वह पीतल की बाल्टी भी उठा ली और बरतनों के साथ उसे भी साफ कर डाला, जैसे ही ऊपर उस बाल्टी को साफ कर जमीन पर रखा, उसे पीतल की चमकदार बाल्टी से बाबा साहब की शक्ल दिखाई दी, उसने समझा आंखों का धोखा है फिर रोशनी में लाकर वह घबरा गई और घर में जो नौकर और दूसरे लोग थे उनको बुलाकर दिखाया. वह बाबा साहब की शक्ल हाथ उठाकर आशीर्वाद दे रही थी. शाम को पंडित बिहारी के घर से लोग आये तो उन्होंने बाल्टी को पूजा की जगहरखकर धूप जलाई. पूजा के दूसरे दिन पंडित बिहारी के ठेके में सबसे ज्यादा लाभ हुआ और उस काम करने वाली के पति ने जो नम्बर दड़े का लगाया था उस पर उसे दस हजार रुपये मिले।

पंडित बिहारी का रेलवे स्टेशन इटावा पर दूध का ठेका था इसलिए उनके पास कई गायें थीं, पंडित जी सबह 10-11 बजे उन सबको लेकर स्टेशन पार चले जाते थे और उन्हें चरने छोड़ देते थे. जब कभी वह गांव जाते थे. मन में बाबा साहब से कह जाते थे कि बाबा साहब देखना, गाय ले न जाए. वह जब घर पहुंचकर लौटते तो उनसे पहले सब गायें घर पहुँच जाती थी.

शहर में लोगों की गाय अक्सर चोरी हो जाती, पंडित की गायें कभी कहीं नही गई. एक रात जब कुछ लोग शिकोहाबाद में दरगाह पर बैठे बाबा छेन्कुर वालों से बातें कर रहे थे तब साहब ने पंडित जी से पूछा '' बिहारी मुझसे कब तक अपनी गायों की रखवाली करवाएगी. पंडित जी ने माफ़ी मांगी, तब सबको पूरा वाक्य बताया.

सरदार उजागर सिंह पंजाब के रामनगर जिले में पुलिस इन्पैक्टर के घर में पैदा हुए थे, पिता पुलिस में इन्सपेक्टर व गाँव के जमीदार थे. माँ इनके जन्म के कुछ समय बाद स्व. सिधार गयी थी. सरदार उजागर सिंह के पिता ने दूसरी शादी कर ली, जिससे इनका बचपन कष्टमय हो गया,अपनी सौतेली माँ के व्यवहार से तंग आकर उन्होंने ग्यारह साल की उम्र में घर छोड़ दिया. इधर-उधर छोटी मोटी नौकरी की. दिन रात मेहनत की, हर काम लगन व मेहनत से किया, हर तरह की मुसीबत का सामना छोटी सी उम्र में खुशी-खुशी किया.

धीरे-धीरे मोटर साइकिल मैकेनिक बन ही गये और कुछ समय एटा में नौकरी की फिर मैनपुरी में अपनी वर्कशॉप खोली, लेकिन कम उम्र के मैकेनिक से कौन अपनी गाडी ठीक करवाए. सरदार जी बड़ी मेहनत और सोच समझकर काम करते पर ग्राहक तो उम्र देखकर अच्छे उस्ताद से ही काम करवाते. चौबे ने इनसे अपनी बस का काम करवाया. उन्हें अच्छा लगा. सरदार उजागर सिंह की

बातों से बहुत खुश हुए और पक्के ग्राहक बन गये. उनकीदेखादेखी दूसरे बस मालिक भी काम कराने लगे.

उस समय मैनपुरी में कम ही बसें व कारें थीं. इटावा पास ही था. जहाँ काम ज्यादा मिलने की उम्मीद से उन्होंने1934 में इटावा आकर वर्कशॉप शुरू किया. धार्मिक विचारों वाले हर धर्म की इज्जत करने वाले, साधू-संतों की सेवा करना उनका नियम था. आजाद तबियत, खुला हाथ, अच्छी आमदनी, जी भर कर अमीरी की और दिल खोलकर दान किया, एक तवायफ के यहाँ आना जाना था, वह भी अपना धंधा छोड़ उन्हीं की हो गई, पर जरा सी बात पर वर्षों के ताल्लुकात पर लात मार दी, उसे यह पसन्द नहीं था कि शिकोहाबाद वाले वाबा साहब को सारा समय दें और रुपया भी खर्च करें वह सरदार को इस तरफ से हटाना चाहती थी.

एक बार सरदार जी ने उसके कमरे में बैठकर शिकोहाबाद भेजने के लिए खुद खीर बनाई, बड़े प्यार और जतन से बनाई खीर शिकोहाबाद बाबा साहब के पास भेजी गई. बाबा साहब का रात को दरबार लगा तो प्रसाद में खीर बांटी गयी, थोड़ी देर बाद जिसने प्रसाद खाया उसे उल्टी होने लगी तब बाबा साहब ने बताया कि सरदार उजागर सिंह की उस स्त्री ने किया है. सरदार जी को जब पता चला उसी समय से उसे छोड़ दिया. अन्तिम समय तक उसका मुंह नहीं देखा।

कौन इतना बड़ा त्याग कर सकता है. यह सरदार उजागर सिंह का ही दम था. इटावा छोड़कर वह शिकोहाबाद आ गये. शहर में खूब काम चला. शाम को दुकान बन्द कर दरगाह शरीफ आ जाते. रत को दरगाह पर ही मुकाम करने लगे. कुछ समय बाद वर्क शॉप अपने शागिर्द को दे वह दिन रत दरगाह पर ही रहने लगे.

अमीरी की तो ऐसी की सब जर लुटा बैठे,

फकीरी की तोऐसी की कि गुरु के दर आ बैठे.

पाताम‍ा सोने का माल बाद रात को दरगाह पर ही मुकाम करने लगे। कुछ नियाद पर्कशाम अपने शागिएको +वह दिन रात दरगाह पर ही रहने

बारी मियां साहब की मेन बाजार में साइकिल मरम्मत की दुकान थी. खूब आमदनी थी, अच्छा खासा परिवार था. शहर में मान-सम्मान था, बारी साहब पक्के मुसलमान थे. खुदा से डरने, पांचों वक्त की नमाज पढ़ने वाले. शहर के दूसरे लोगों के साथ सूफी मुल्तान शाह साहब के मजार शरीफ पर आये और सूफी साहब के ही होकर रह गये. दरगाह शरीफ की तामीर में जी जान से लग गये. दरगाह शरीफ की नींव के पत्थरों में से एक है.

उनकी दिली इच्छा थी कि उन्हें गैवी ताकत मिल जाये और उनके लिए वह दूर-दूर तक दौड़ धूप करते रहते थे. छैंकुर वाले बाबा साहब से कई बार यह अपनी इच्छा जाहिर की, पर बार-बार इन्तजार करने को कहते थे. बारी साहब में इन्तजार करने का मादा कम था. किसी से कोई जानकारी हासिल कर बिना किसी को बताये चल पड़े गैवी ताकत हासिल करने के लिए दुकान बन्द कर शाम को आ जाते, राम जब पूरा शबाब पर होती चुपचाप उठ मजार सरीफ के पीछे बैठकर कुछ चिल्ला करते.

रात अंधेरी सुनसान जगह दो चार लोग दरगाह पर होते, वह भी दिनभर कड़ी मेहनत करने के बाद घोड़े बेचकर नींद की आगोश में होते, कभी-भी दूर किसी फैक्ट्री में घंटा बज उठता. उससे समय का

पता चलता, इसके अलावा कोई किसी प्रकार की कहीं आवाज नहीं, ऐसे डरावने वातावरण में वारी साहब मजार के पीछे माला फेर रहे होते, बीच बीच में आग पर लोबान डालते जाते.

एक रात वह अपने इसी प्रोग्राम में मस्त हो माला फेर रहे थे कि देखते क्या है कि एक बड़ा डरावना शेर उनके पास आकर खड़ा हो गया और मुंह खोल पंजा उठा दहाड़ उठा. बारी मियां डरे नहीं अपने काम में लगे रहे. एकाएक शेर डरावने इंसान में बदल गया. बड़े-बड़े दांत पूरेशरीर पर बाल, बड़ी-बड़ी आंखें, लम्बे नाखून अबकी बार मियां को

थोड़ा सा डर लगा. वह समझ रहे कि सब मेरी चिल्ला तुड़वाने के लिए हो रहा है.उन्होंने आंखे बंद कर काम जारी रखा, थोड़ी देर में चार पांच पहले वाले से भी डरावने लोग उछल कूद बारी साहब की तरफ बढ़ने लगे. अब वह बुरी तरह कांपने लगे, शरीर पसीने-पसीने हो गया, उठकर भागने की सोची पर भागकर उससे बचना नामुमकिन जान बाबा साहब सूफी साहब से अपने बचने की गुजारिश करने लगे कुछ सेकिण्ड में बाबा साहब का नाम लेते ही बाबा साहब खुद प्रकट हो गये उनके आते ही वह सब ऐसे भागे जैसे कभी आए नहीं थे. बारी साहब ने सब सामान वहीं छोड़ा और अपने बिस्तर पर चुपचाप लेट गए, सुबह सबसे पहले उठकर घर चले गय.

रात जब सब बैठे अपनी-अपनी बात बाबा साहब से कर रहे थे. बाबा साहब ने बारी साहब को बुला पूछा-कल में समय पर न आता तो तुम जानते हो क्या होता बिन रहवर के ऐसे कामों में हाथ नहीं डालते. इतना सुनकर लोगों ने वारी साहब से पूरी दास्तान सुनी.

बाद में बाबा छैंकुर वाले ने उन्हें कुछ पढ़ने को दिया. बारी साहब ने उस ताकत को पाने के बाद दीन दुखियों की बड़ी सेवा की.

बाबू विशम्भर नाथ

सन 1952 में हिन्द लैम्प फैक्टरी शिकोहाबाद आई. विशम्भर नाथ एकाउन्ट डिपार्टमेंट क्लर्क होकर आए. वह अपने बचपन से ही धार्मिक स्वभाव के थे. वह नम्र तवियत, सभ्य समाज में पले, मेहनती ईमानदारी होने के साथ साथ परमात्मा से डरने वाले सच्चे इंसान हैं.

फैक्ट्री स्टेशन के पास होने की वजह सेदूध वगैरह लेने शाम बाबू जी को स्टेशन बाजार में आना होता था. शाम को खाना खाने के बाद भी वह अक्सर इसी तरफ निकल आते थे. स्टेशन से बाहर निकलते ही एक दूध, दही, चाय की दुकान थी, उसी दुकान के पास बाबू जी बैठ जाया करते थे.

एक दिन उस दुकानदार ने उनसे अपने लड़के की शिकायत की. उन्होंने बताया कि अकेला लड़का है. इसे समझाइये, उन्होंने बताया मेरा यह इधर कुछ दिनों से पास नहर के किनारे जो दरगाह है वहां आने जाने लगा है. ज्यादा समय वहीं बिताता है, दुकान के काम में मन नहीं लगाता.

विशम्भर नाथ ने समय देना शुरू किया, जान पहचान बढ़ाई. फिर समझाना शुरू किया. इसी दौरान वह भी दरगाह शरीफ गये. गये थे रोजे छुड़ाने, नमाज गले पड़ गई" वाली कहावत हो गई. उनका मन उस जगह पर इतना रम गया कि रोज सुबह-शाम जाना शुरू कर दिया. छुट्टी के दिन अधिक समय देते वहां जब सफाई, मिट्टी आदि का काम होता तो वह सब के साथ खुद मेहनत करते, सर पर तशला उठाते,घास फूस साफ करते.

रोज सुबह आते, पेडों में पानी देते. उनके साथ उनके बच्चे भी आते,लड़का रवी कुमार भी पेड़ों में पानी डालने में पिता का हाथ बटांता.

फैक्ट्री में उनके साथियों को उनके इस परिवर्तन का पता चल ही गया तो उन्होंने उन्हें बहत समझाया कि मुसलमानों की दरगाह पर आप क्यों जाते हैं बगैरह-बगैरह, पर विशम्भर नाथ बाबा साहब सूफी सुल्तान शाह साहब के पक्के भक्त हो गये थे. उन पर कोई असर होते नदेख उन्होंने इस परिवार का सोशल बाईकाट कर दिया.

उस समय दरगाह शरीफ पर दो-तीन कच्ची झोपड़ियां थीं. बाबा साहब अगर दिन में कहीं आराम करना चाहें तो कोई जगह न थी. बाबू जी ने इस कमी को महसूस कर एक पक्का कमरा बनवाने की इजाजत चाही. हर बार जबाब न में ही मिलता,बड़ी मुश्किल से इनको इजाजत मिली और बाबा साहब ने आराम फरमाने के कमरे की तामीर हुई.

इसी दौरान उनके लड़के रवि कुमार का जो कॉलेज में पढ़ता था,झगड़ा उसी कॉलेज के लड़कों से हुआ उससे विशम्भर नाथ को बड़ा दुःख हुआ,बात बाबा साहब तक पहुँची. उन्होंने कहलाया “इस लड़के का कहीं दूसरे शहर में इंतजाम कर दो बाकी में दुआ करुंगा" बाबा छैंकुर वाले की आज्ञानुसार रवि कुमार को गाजियाबाद उनकी बुआ के पास भेज दिया गया.

बाबा साहब की दुआ से आज रवि कुमार यू.पी. में माने हुए चार्टेड एकाउटेन्ट हैं. शहर में इनका नाम है. बाबू जी की राज नगर कालोनी में आलीशान कोठी है. शिकोहाबाद छोड़े बाबू विशम्भर नाथ को एक अरसा हो गया पर अभी भी वहां की जनता बाबू जी को दरगाह की वजह से जानते हैं और सर आंखों पर बैठाते हैं.

सीताराम मिश्रा छौन

प. बिहारी लाल के छोटे लड़के सीताराम मिश्रा को बाबा साहब बहुत चाहते थे. जब जहां चाहा बुला लिया,बातचीत कर ली. हाईस्कूल के बाद जब वह आगरा पढ़ने गए,बाबा साहब ने उनकी पढ़ाई का पूरा खर्चा अपने ऊपर ले लिया. इटावा में या शिकोहाबाद में कब्बाली का प्रोग्राम होता सीताराम जाते पर कब्बाल को देने के लिए रुपये होते नहीं थे,इसलिये उन्होंने प्रोग्राम में जाना बन्द कर दिया. बाबा साहब को जब पता चला उन्होंने कब्बालों को देने के लिए रुपये मजीद साहब से भिजवाए.

बाबा साहब के पास दूर-दूर से बहुत सारे खत आते थे उनके पास समय नहीं होता था इसलिए बाबा साहब ने उनके जबाब देने को कहा. सीताराम ने कहा इन खतों में तरह-तरह की ख्वाइशें,मुरादें होती हैं. मैं क्या जबाब दूंगा तो बाबा साहब ने फरमाया "तुम्हारी कलम वही लिखेगी जो मैं लिखवाऊँगा" इस तरह बाबा साहब के खतों का जबाब सीताराम खुद लिखते. यह सिलसिला तब तक चला जब तक सीताराम की नौकरी दिल्ली में नहीं लग गई.

सीताराम सरकारी नौकरी के लिये ओवर ऐज हो चुके थे पर बाबा साहब के करम सेउन्हें सरकारी नौकरी मिल गई. सीताराम नौकरी से रिटायर होने के बाद बीमार रहने लगे. इसी दौरान उन्हें लकवा मार गया. डाक्टरों की दवा से फायदा नहीं हुआ,डाक्टरों ने उसे आराम की सलाह दी. बाबा साहब को बताया गया. धीरे-धीरे बिना दवा सीताराम ठीक हो गये. डाक्टरों को बड़ा आश्चर्य हुआ.

उन्हीं के छोटे लड़के अतुल मिश्रा बोबी अपने दोस्त की शादी में शरीक होकर दिल्ली ट्रेन से वापिस हो रहे थे, उनके साथ मुकेश उर्फ राजू वाजपेई भी थे. गाड़ी में भीड़ अधिक थी, अतुल दरवाजे पर खड़े थे दरवाजा खुला था, गाड़ी चल पड़ी. गाड़ी ने पूरी स्पीड पकड़ी जैसे ही गाड़ी ने पटरी बदली अतुल को झटका लगा और अतुल गाड़ी से गिर पड़े. नीचे पटरी के किनारे पथरों पर घिसटते और लोगों में शोर मच गया. किसी ने चेन खीची दूर जाकर गाड़ी रुकी,मुकेशव और लोग भागे-भागे अतुल के पास पहुँचे. देखा अतुल खून से लथपथ बेहोश पड़े हैं.

मुकेश की आंखों में अंधेरा छा गया, पास एक पैसा नहीं अनजान शहर कोई जान पहचान नहीं मदद मिले भी तो किससे, बाबा का नाम ही एक सहारा था उन्होंने सोचा, तू है तो हर सहारा है" उसके बाद साधन पर साधन बनते गये एक रिक्शे वाला न जाने कहाँ से आ गया उसने बेहोश अतुल को कंधे पर डाला और अपने रिक्शे में हैलेट अस्पताल ले गया. डाक्टरों ने देखा, मरहम पट्टी की और कहा- इनको लखनऊ एक बड़े डाक्टर को ले जाकर दिखाओ.

दिमाग में चोट है. मुकेश कैसे डाक्टरों से कहे कि उनके पास रुपये भी नहीं हैं. मुकेश अभी इसी सोच विचार में थे कि डाक्टर साहब एक और डाक्टर के साथ आये और अपने साथ लाए डाक्टर से अतुल को दिखाया, कुछ दवा लिखी और चले गये. डाक्टर ने बाद में बताया कि जिस डाक्टर को दिखाने लखनऊ जाना था, यह वही डाक्टर थे. काम से कानपुर छुट्टी पर आये थे. किस्मत से अस्पताल आ गये अब वहां जाने की जरूरत नहीं. दवा तो नाम की थी, काम तो दुआ ने किया. अतुल ने बताया कि मुझे गिरने तक तो पता है बाद को ऐसा लगा मुझे किसी ने गोद में ले लिया.

कुछ दिनों बाद सीताराम अतुल द्वारा कही गयी बात बाबा साहब से कही कि अतुल कहता है कि उसे ऐसा लगा कि किसी ने उसे हाथों पर लेकर पत्थरों पर लिटा दिया, तो बाबा साहब ने कहा"अभी तो मेरे हाथों में इतनी ताकत है कि मैं तुम्हारे बेटे का बोझा उठा सकूँ.

अतुल उर्फ बोबी भी अपनी धुन का पक्का है, वह सबके मना करने पर भी दिल्ली से शिकोहाबाद तक रेलवे लाइन किनारे पैदल गया और दरगाह शरीफ और बाबा साहब की चौखट पर अपनी यकीदत के फूल चढ़ाये.

ठा. प्रताप सिंह

प्रताप सिंह जब से हजरत सूफी सुल्तान शाह साहब की दरगाह शरीफ चौखट पर - माथा टेका है. तब से अब तक ऐसी कोई बृहस्पति ऐसी नहीं गई जिसकी उन्होंने नागा कियाहो. कोई भी ताकत उनको बृहस्पति की हाजरी लगाने से रोक नहीं पाई. अब ठाकर साहब 90 के आस-पास हैं पर बाबा साहब ने क्या दवा पिलाई है कि डाक्टर उनके पास नहीं आ पाता. जवानी में मजबूत मजदूर से ज्यादा काम दरगाह पर उन्होंने किया. जो काम उन्हें सौंपा गया उसे उन्होंने पूरा किया.

श्री नफीस अहमद (कब्बाल)

वीरवार को इटावा से कुछ कब्बाल भी दरगाह शरीफ आने लगे. रात को थोड़ी कब्बालियां गा कर जो कुछ मिल जाता, खुशी-खुशी कबूल कर सुबह ही पहली ट्रेन से वापस घर चले जाते. उन्हीं कब्बालों में से एक 8-10 साल का लड़का नफीस भी आता था. वह बड़ी लगन से तालियां बजाया करता था, उसके वालिद बड़ा अच्छा सितार बजाते थे. कुछ दिनों बाद वह लड़का कुछ गाने भी लगा फिर वह कभी-कभी शिकोहाबाद दरगाह आ जाता रात को अकेला ही जैसा कुछ आता, गाता और अपने खर्च से आता और अपने खर्च से ही वापस चला जाता. धीरे-धीरे फकीर की नजर उस पर पड़ी और वह बड़ा हआ. रसीली आवाज और बढ़िया सूफियाना कलाम सुन महफिल झूम उठती. आस-पास के कब्बाल उनके आगे नहीं टिकते. सूफी सुल्तान शाह साहब कादर छोड़ वह किसी दूसरे का नहीं हुआ. हर प्रोग्राम में बिना बुलाए आ जाना, जो कुछ मिला सर से लगा कर कबूल किया न मिला तो गिला नहीं. बाबा साहब ने उसे चादर बांधकर दरगाह का शाही कब्बाल बनाया. तब से प्रोग्राम के लिए कब्बालों का इन्तजाम करना बगैर उसका खास काम बन गया, वह दरगाह शरीफ कमेटी का खास मेम्बर बन गया. बाबा साहब उसको कभी-कभी जरुर सुनते. कभी-कभी खास चीज की फरमाइश कर सुनते. उसे हुजूरे अलिया ने क्या-क्या दिया यह अप नफ़ीस से खुद सुनिए. बाबा साहब का कर्म देखिए एक अदना कब्बाल को बड़ा ठेकेदार बना दिया, लाखो का कारोबार है, पर वह अपनी धुन का पक्का हजारों को छोड़ वह दरगाह शरीफ के हर प्रोग्राम में अपनी हाजिरी करवाता है. जब हुजुर सुन रहें हो और नफ़ीस सुना रहा हो तो महफ़िल का क्या कहना.

चुन्नी ठेकेदार

हजरत सूफी सुल्तान शाह साहब की दरगाह पर शिकोहाबाद के पास धातरी गाँव के महबूब शाह मुजाविर थे उनका छोटा लड़का मां-बाप की दिन-रात सेवा करता, दिन भर मजदूरी करता, शाम को काम से लौट मां-बाप की सेवा में लग जाता था. उसने एक फलांग दूर नदी से गीली चिकनी मिट्टी ला लाकर अपने मां-बाप के रहने के लिए मिट्टी की मोटी दीवालों की एक मड़इया डाली. फिर दूसरे आने वाले यकीदत मन्दों के लिए दो मड़इया और डाली. उसकी लगन व मेहनत रंग लाई सच्चा रहनर मिल गया और मां-बाप की सेवा वदरगाह पर मेहनत करता. सूफी बाबा व बाबा साहब छैंकुर वाले बाबा को भा गया कहा है, जिस मात पिता की सेवा की, तिन तीरथ जाप कियो ना कियो.

और आज वही चुन्नी शिकोहाबाद के आस-पास के कई जिलों में नम्बर वन ठेकेदार हैं. लाखों के ठेके लेता है. अपने गांव धातरी में व शिकोहाबाद में आलीशान मकान है. आज भी बाबा का गुलाम है.

रामलखन यादव

शिकोहाबाद शहर में एक ही परिवार है, जिसका हर व्यक्ति दरगाह सूफी सल्तान शाह साहब के प्रति पूर्ण रूप से श्रद्धा रखता है, तन मन धन से अर्पित है और वह परिवार है, स्व. श्री रामलखन यादव का परिवार. श्री रामलखन जी हिन्द लैम्प कम्पनी में काम करते थे, दरगाह शरीफ के हर काम में आगे बढ़कर हिस्सा लेते थे कोई कठिन से कठिन काम उन करने को कहा जाता वह उसे सफल बनाते. उनकी देखा देखी फैक्ट्री के छोटे-बडे बहुत से अफसर सूफी साहब के मुरीद हो गये.

रामलखन ने अपने सब घर को बाबा साहब का बना दिया, बाबा साहब की कृपा से दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की इस परिवार ने की. इसी परिवार में है, चरण सिंह व अशोक. यह श्री रामलखन के छोटे भाई हैं. श्री रामलखन ने बाबा साहब को खुश करने की नई राह निकाली उन्होंने उन दो भाइयों को कब्बाली गाने की तरफ रुझान पैदा किया वैसे तो यह दोनों पुलिस में ऊँचे आहदों पर है, पर बाबा साहब को सुनाने के लिए नई और उनकी पसन्द की गजलें ढूंढ कर लाते हैं और मन से सुनाते हैं. घण्टों बिना विश्राम किये गाते रहते हैं. अब यह दोनों भाइयों की टीम अच्छे-अच्छे कब्बालों को मात दे रही है.

प्रीतम सिंह

तीन पीढ़ियों से दरगाह सूफी सुल्तान साहब व बाबा छेकुर वाले के भक्त और तन मन धन से दरगाह सरीफ की सेवा करने वाले परिवार की तीसरी पीढ़ी की बागडोर श्री प्रीतम सिंह के हाथ में है. इनके बाबा श्री लक्ष्मी सिंह दरगाह सरीफ के यकीदत मन्द और बाबा साहब छेंकुर वाले के पक्के भक्त थे. जब भी दरगाह पर रहने वाले किसी व्यक्ति पर किसी ने टेढ़ी नजर डाली तो उन्होंने फौरन आकर उसे डांटा और उससे मांफी मगवाई. उनके डर से आस-पास के लोग भूल कर भी बुरी नजर नहीं डालते थे. उनके स्वर्ग सिधारने के बाद भी वर्षों तक लोगों पर उनका डर रहा. उसके बाद प्रीतम सिंह के पिता श्री लज्जाराम ने भी अपने पिता की तरह दरगाह सरीफ पर रहने वालों की मदद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी. फर्क इतना ही है कि जहां श्री गर्म मिजाज थे, वहीं श्री प्रीतम सिंह के पिता नर्म स्वभाव और सज्जनता की मिशाल हैं.

अब प्रीतम सिंह अपने बाबा के गर्म मिजाज और पिता की सज्जनता दोनों का मिला जुला संगम है. जब से इन्होंने दरगाह के कामों में सिरखत करना शुरू किया है, सब कुछ छोड़ यही का हो गया है.

यह है, और भी है इस पवित्र स्थान की नींव के पत्थर का इन पर साया है, हजरत सूफा सुल्तान शाह साहब, रहमत उल्ला और हुजूर सूफी बादशाह साहब के दामन का.

करामाते- बाबा छेंकुर वाले हजरत साहब बाबा की लड़की की शादी

लड़की की शादी करने मैनपुरी रेलवे स्टेशन से चौबेजी जिनकी बस इटावा मैनपरी पर चलती थी. शिकोहाबाद के लिये बैठे. ज्योही गाड़ी ने सीटी दी कि एक लम्बे लंगड़े महात्मा सफेद कुर्ता तहमद पहने डिब्बे में चढ़े और चौबे जी की बगल वाली खाली सीट पर बैठ गये. महात्मा के लम्बे-लम्बे सफेद बाल चौड़ा माथा, लम्बी सफेद दाड़ी बता भी रही थी कि यह कोई पहुंचे हुये महात्मा हैं. लाल-लाल बड़ी आंखें, रोबदार चेहरा, हर किसी का मन पैर छूने का हो उठता. गाड़ी शिकोहाबाद की तरफ दौड़ी चली जा रही. "शिकोहाबाद लड़की की शादी पक्की करने जा रहे हो?" बाबा जी ने चौबे से पूछा,

सवाल सुन चौबे जी आश्चर्यचकित रह गये और धीरे से बोले "हाँ" और मन ही मन बाबा को प्रणाम कर सोचा पहुँचे हुए महात्मा हैं तभी तो बिना बताये मेरा शिकोहाबाद जाने का कारण जान

गये. “अच्छा लड़का पसन्द कर आओ फिर कुछ दिक्कत हो तो बताना" बाबा ने जवाब दिया, अब चौबे में इतनी हिम्मत कहाँ कि बाबा साहब से कुछ और पूछ सके, विचारों में खो गये.

गाडी अब शिकोहाबाद स्टेशन से पहले नदी के पुल से गुजरी तो बाबा अपनी सीट से उठे और कहा "अब मैं उतर रहा हूँ, जिस मदद की जरूरत हो तो बताना" चौबे ने खिड़की से झांकते हुए कहा "बाबा रात अंधेरी है, अभी स्टेशन तो दूर है. बाबा जी ने गेट खोलते हुए कहा "मैं यहीं उतरूंगा," गाड़ी रुक गई बाबा साहब के उतरते ही सीटी देकर चल पड़ी.

शिकोहाबाद में चौबे ने लड़का देखा, लड़का सुन्दर, कमाऊ और परिवार भी सभ्य, मिडिल क्लास का, पर उनकी मांग चौबे जी की सोच से भी ज्यादा थी. चौबे अपने सब साधन इस्तेमाल करते तो भी उनकी मांगे पूरी नही कर सकते थे. चौबे जी की सोच से भी ज्यादा थी. चौबे अपने सब साधन इस्तेमाल करते तो भी मांगे पूरी नही कर सकते थे. चिंता से घिरे चौबे जी स्टेशन पहुंचे और घर पहुँच कर पहुँच पत्र भेज कर इंकार कर देंगे. स्टेशन पर एकाएक विचार आया कि रात को बाबा जी जहां उतरे थे वहन चलकर उनको तलाश किया जाए. चौबे के मन में पछतावा था कि बाबा जी ने उनका स्थान, उनके मिलने का ठिकाना क्यों न पूछ लिया.

चौबे रेल पटरी के किनारे नहर पुल तक गये थे कि उधर से वही बाबा आते दिखाई दिए. चौबे जी की जन में जन आई. चौबे पैर छूने के लिए झुके ही थे कि बाबा ने कहा '' घर लड़का अगर तुम्हे पसंद है तो शादी की तैयारी कर. ''बाबा जी मेरे पास उनको देने के लिए कुछ नही हैं, उनकी मांग पूरी करना मेरे बस में नही चौबे बोले, अच्छा तुम शादी की तयारी करो सब ठीक हो जाएगा. अब घर जाओ मुझे कही जाना है. इससे पहले चौबे कुछ बोले बाबा चल पड़े. चौबे सोचते रहे इनकी बात पर कैसे यकीं किया जाए. चौबे स्टेशन आकर गाड़ी में बैठ कर चले गये.

दूसरे दिन सुबह-सुबह उनके घर अब्दुल मजीद इटावा से पहुंचे और अपना परिचय देकर बाबा साहब का सन्देश दिया की उनको कहना कि शादी धूमधाम से करें, अब्दुल मजीद ने उन्हें बाबा साहब का बताया हुआ सट्टे (दड़े) का नम्बर बताया.

उस नम्बर से बाबा साहब की इनायत व करम स चाबन घूमधाम से लड़की कि शादी की लड़के वाले दंग भी रह गये. चौबे बाबा साहब के पक्के भक्त बन गये.

डाकुओं से छुड़ाया

बाबा साहब की करामातों और इनायतों के चर्चे धीरे-धीरे पूरे इटावा जिले में हो गये. इटावा के मुहल्ला रामगंज में एक शाम तीन आदमी एक तवायफ के घर आये, घर की मालकिन को बुलाकर उसकी बेटी को रात के प्रोग्राम के लिए जानेकी बात की, बुढ़िया ने फीस बताई उन्होंने मान ली. उन्होंने उससे कहा “अपनी बेटी को इक्के में लेकर ठीक छैराहे पर आ जाना हम मिल जायेंगे और तुम सबको दावत की जगह ले जायेंगे. यह मुंह मांगी रकम रखो। बुढ़िया ने हाँ भर दी और रुपये रख लिए.

जैसे ही बुढ़िया और उसकी तवायफ जवान बेटी बेकनजीर अपने साजिन्दों के साथ छपैटी छैराहे पर पहुँचे उन्हीं तीन आदमियों ने बेनजीर को इक्के से हाथ पकड़ उतारा और पास खड़े तांगे पर बिठाया पिस्तौल से हवा में गोली चलाकर कहा "हम डाकू हैं इसलिए जा रहे हैं।" बुढ़िया और साजिन्दे

चिल्लाते रह गये. तांगा हवा में बातें करता जमुना के खारों की तरफ चला गया. बुढ़िया और साजिन्दे रोते चिल्लाते थाने गये, रिपोर्ट लिखवाई, पर उन्हें यकीन था कि पुलिस कुछ नहीं कर पायेगी क्योंकि चम्बल के डाकुओं का डर उन पर हावी था. बुढ़िया का रो-रो कर बुरा हाल था, पूरे मुहल्ले में बात फैल गई, बुढ़िया के कमरे पर भीड जमा हो गई. जितने लोग उनकी बातें सुनते कोई कुछ कहता कोई कुछ. बुढ़िया रोये जा रही थी, एक पड़ोसी तवायफ ने कहा मेरे साथ चलो देखते हैं बाबा छेंकुर वाले को जानने वाला घर मिल जाता है तो बाबा जरूर तुम्हारी बेटी को छुड़ा देंगे.

बुढ़िया उनके साथ कटरा पुरदलखां गई. मजीद मियां सो गये थे, जगा कर माजरा सुनाया. अब्दुल मजीद हाल सुनते ही पैदल नुमायश मैदान के पास हजरत बाइस ख्वाजा शरीफ गये और आकर बुढ़िया को बताया- बाबा ने कहा है फिक्र मत करो सुबह तक तुम्हारी बेटी बा-इज्जत तुम्हारे पास आ जायेगी, मैं दुआ कर रहा हूँ.

बुढ़िया की जान में जान आई, घर आकर बाबा साहब का ध्यान करती रही, आंखों में नींद कहाँ. अपनी बेटी के अलावा उसका कोई सहारा नहीं था, कैसे बाकी जिन्दगी काटेगी, क्या होगा, यही सोच विचार में थी कि किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी, बुढ़िया ने दरवाजा खोला, तो बेटी खड़ी थी. दोनों गले मिली दोनों की आँखों से आंसू बह रहे थे पर यह खुशी के आंसू थे.

एक ही नंबर बार-बार आना

अब्दुल मजीद दूसरे के दुःख को देख सुन कर खुद भी दुःखी हो जाया करते थे. जब उस दुखी की फरियाद बाबा साहब छेंकुर वाले को सुनाते तो उसे उस तरह ब्यान करते थे कि बाबा साहब जरूर मदद फरमाते. हबीब उल्लाह इटावा का रहने वाला बहुत गरीब,बेसहारा और सीधा इंसान था.वह इतना गरीब था कि रोजी रोटी को महुताज था. मजीद साहब ने उसकी गरीबी की दास्तान इस तरह सुनाई कि फौरन बाबा साहब एक नम्बर उसे बताने के लिये मजीद को बताया और कहा इससे जो रकम मिले उससे कोई धन्धा शुरू कर ले.

मजीद मियां बाबा साहब का कहा हुआ बताया और नम्बर भी बताया उसने वह नम्बर खुद लगाया, दूसरे दोस्तों को बताया और "बाबा साहब छेंकुर वाले ने नम्बर बताया है" यह भी कहा, नम्बर लेने वाले के कानों में यह बात पड़ी तो उसने कहा "आ गया यह नम्बर ऐसे बाबा बहुत देखे हैं" नम्बर वही आया जो बताया गया था और सबको पैसा भी मिला. सुनने वाले ने यह बात हवीव उल्लाह को बताई उसने मजीद को बताई, मजीद मियां ने गुस्से में यह बात बाबा साहब से कह दी. बाबा साहब ने कहा "जाकर उससे कहदो नम्बर जब भी खुलेगा यही आयेगा और हुआ भी ऐसा ही, रोज वही नम्बर खुलता. लोगों को खूब रुपया मिलता. लगाने वालों की तादाद भी बढ़ती गई. तीसरे दिन जब नम्बर लेने वाले की दिवालिया होने की नौबत आ गई तो उन्होंने मजीद मियां का घर तलाश कर उनके पास पैर पकड़ माफी मांगी और कहा मुझे बचा लो. मजीद साहब बड़े रहम दिल थे, जाकर बाबा साहब को पूरा हाल सुनाया दूसरे दिन से वह नम्बर निकलना बन्द हो गया.

बेरोजगारों को रोजगार

बाबा छेंकुर वाले से अपना दुखड़ा रोने इटावा से शिकोहाबाद दरगाह शूफी सुल्तान साहब रहमान आने वाले लोगों में कुछ लोग बेरोजगार थे. काम धंधा नहीं था, उन सबने मिलकर मजीद को मदद करने को कहा. मजीद मियां ने बाबा साहब से उनकी बात बाबा (साहब तक पहुंचाई) जबाब आया "काम तलाश करो, मगर ऐसा जिसमे सबको काम मिल जाये" लोगों ने काम तलाश करना शरू किया और दादा भाई नौरोजी का एक सिनेमा हाल था, जो काफी समय से खाली पड़ा था उनको उसमें घाटा हुआ था, दादा भाई जहां आजकल बिजली का दफ्तर है, वहां रहते थे. उनसे बात की गई, वह किराये पर देने को तैयार हो गये. बाबा साहब ने वह रकम मजीद से भिजवा दी. कमालेयार देखिए, एक ही जगह बीस दिन के करीब पच्चीस आदमी काम से लग गये. हर रोज तीन शो होते. हाउस फुल का बोर्ड हर शो में लग जाता, हर किसी को उसकी काबलियत के हिसाब से ड्यूटी मिल गई. बुधवार रात को शो खत्म कर बस किराये पर लेकर शिकोहाबाद आते सुबह वापस इटवा दोपहर के शो टाइम काम पर पहुंच जाते. घर का अपना काम, कोई चिन्ता नहीं अच्छी आमदनी. जब इन लोगों के दोस्तों-रिश्तेदारों को पता चला तो फ्री पास वाले आने लगे. इतने पास बंटते कि पिक्चर देखने वालों के आधे फ्री पास होते कुछ लोग तो फ्री पास होने के कारण तीन-तीन बार एक ही पिक्चर देखते. लाभ नुकसान में बदने लगा. कोई किसी की बात मानने को तैयार नहीं बदइन्तजामी का बोल बाला हो गया. धीरे-धीरे हालत बदसे बदतर होती गयी. नतीजन सिनेमा हाल बन्द कर दादाभाई को सौंप दिया गया.

बस चलेगी

चौबे जिनकी लड़की की शादी धूमधाम से छेंकुर वाले बाबा ने कराई थी, उनकी एक बस इटावा मैनपुरी चलती थी. वही उनकी रोजी रोटी थी, इसके अलावा और कोई आमदनी का साधन नहीं था, सारे उत्तर प्रदेश में रोडवेज चलाने का प्रोग्राम उत्तर प्रदेश सरकार ने शुरू किया और बसें चलना शुरू हो गई. चौबे को बड़ी चिन्ता हुई बेचारों की नींद हराम. उठते बैठते यही उनके मुंह से निकलता"अब क्या होगा" चौबे ने बात बाबा जी तक पहुँचाई. छेकुर वाले बाबा जी ने मजीद मियां को भेजकर कहलाया"उससे कहा कि कोई और धंधा कर लें" पर चौबे ने जबाब दिया "बस गई तो मेरी इज्जत गई" अब इस बुढ़ापे में और धंधा क्या करूंगा? बाबा जी ने कहलाया "अच्छा तो तेरी बस इसी तरह चलती रहेगी" रोडवेज नहीं आयेगी. चौबे जी नहीं रहे पर उनकी बस इटावा मैनपुरी पर चलती रहीं. इस लाइन पर रोडवेज आज तक नहीं चली. उनके मानने वाले कहते हैं"बाबा की बात पत्थर पैलकीर."

औ सर पै खाक उड़ा कर आंधियां रोती रही

रात के ग्यारह बजे का समय था, बाबा साहब का दरबार रोजाना की तरह लगा था. मजीद खां ने दो-चार लोगों की ही बात बाबा साहब से कराई थी. बाबा साहब ने मजीद से कहा, "मुझे जरूरी काम से दिल्ली जाना है, मेरे गये बगैर काम नहीं चलेगा. बाकी को कल आने की कह दो."

जरूरी काम क्या था, यह कई दिनों बाद पता चला कि स्व. श्री आनन्द स्वरूप बाजपेयी के लड़के चैतन्य स्वरूप का बड़ा भयंकर एक्सीडेंट हो गया था.

चैतन्य स्वरूप बचपन से दरगाह शरीफ आते थे और उनके पिता दरगाह शरीफ की नींव के एक मजबूत पत्थर थे. उन पर बाबा साहब की नजरें इनायत थीं और उनके लडके का एक्सीडेंट हो और बाबा साहब शिकोहाबाद में ही रहें यह बाबा साहब को गवारा नहीं हुआ, जब गज को मगरमच्छ ने पकड़ लिया और समुद्र में खींच ले गया तो हाथी ने श्रीकृष्ण जी को पुकारा तो श्रीकृष्ण फौरन खुद पैदल उसकी मदद को पहुंचे उन्होंने गरूड़ का इंतजार नहीं किया.

इसी प्रकार बाबा साहब ने अपने किसी को नहीं भेजा खुद जाकर सब साधन बनाए.

चैतन्य स्वरूप दफ्तर से रात 10 बजे स्कूटर पर चले, दिल्ली गेट तक बड़े आराम से स्कूटर चलाते आये, स्कूटर आराम से हल्की स्पीड में चल रहा था, एकदम किसी ने टक्कर मारी, चैतन्य गिर कर स्कूटर के साथ कुछ दूर घिसटते और सड़क किनारे गिर कर बेहोश हो गए. सड़क पर स्कूटर आते, कारें जाती देखती और चली जाती. कोई किसी तरह की मदद नहीं. बेहोश पड़े-पड़े कितनी देर हुई पता नहीं कौन उठाकर ले गया और अस्पताल के गेट पर लिटा आया.

चैतन्य के घर फोन की घण्टी बजी और किसी ने बताया कि चैतन्य स्वरूप का एक्सीडेंट हो गया है, इरविन अस्पताल के बाहर पड़े हैं.

भागे-भागे घर के लोग अस्पताल गए, एक दिन अस्पताल में रह घर वापस आये उनका इलाज तो आगे कई दिन तक चला.

यह वह ही चैतन्य स्वरूप हैं, जिन्हें एक बार जब यह घर से भाग कर अपने पापा के पास शिकोहाबाद पहुँच गये थे, तो बाबा साहब ने इन्हें रुपये मजीद से भिजवाये थे, आज तक इनको जो भी काम सौपा गया इन्होंने लगन मेहनत से किया.

ट्रेन से कटने से बचाया

राम भरोसे लाल चंचल ग्राम दुल्हना माधोगंज, शिकोहाबाद में रहते हैं और हिन्द लैम्प में काम करते थे. दरगाह पर आते सिजदा करते और चले जाते, न किसी का लेना, न किसी का देना. सीधे-साधे आदमी अपने में मस्त, बाबा साहब के बारे में सुना तो मन ही मन उनके भक्त बन गये. बाबा साहब से कहें भी तो क्या, यही सोचते रहते, उनके ख्यालों में अधिक समय व्यतीत होता. जो बाबा साहब को मन से चाहता है, उसके ऊपर बाबा साहब की नजर हमेशा रहती है.

वह अच्छे कवि भी हैं, गरू महिमा पर उन्होंने एक कवितावली भी लिखी है. वह भतीजे की शादी से धौलपुर से लौट रहे थे. टूण्डला स्टेशन पर तूफान मेल में चढ़ रहे थे कि गाड़ी चल दी, उनकी पकड़ ढीली पड़ गयी और वह गाड़ी के नीचे चले गये. जो साथ थे, उनमें कोहराम मच गया औरतें चीखने लगीं. गाड़ी ने स्पीड पकड़ ली, जो चढ़ चुके थे उनमें से किसी ने जंजीर खींची.

जैसे ही गाड़ी ने प्लेट फार्म छोड़ा लोग प्लेट फार्म से नीचे पटरी पर उतरे देखा रामभरोसे एक किनारे साधे आंखें बंद किये लेटे हैं. जब लोगों ने उन्हें आवाज दी, हिलाया तो उन्होंने ऐसे आंख खोली. इधर-उधर ऐसे देखा जैसे किसी को तलाश रहे हों.

लोगों ने उन्हें उठाकर सहारा दिया, जब ऊपर प्लेट फार्म पर लाए, तब नाते-रिश्तेदारों की सांस में सांस आई. भीड़ में से एक बूढ़ा आदमी भीड़ हटाते हुए राम भरोसे के पास आकर गौर से देखते

हुए पूछा, "बेटा चोट तो नहीं लगी" रामभरोसे ने उनके पैर छूने की कोशिश करते हुए कहा नही, वह व्यक्ति देखने में सुन्दर हुष्ट-पुष्ट सफेद दाड़ी, लम्बे बाल, चौड़ा माथा और बड़ी-बड़ी लाल आँखों वाला था, फौरन उठा और प्लेटफार्म की भीड़ में गुम हो गया.

बाद में रामभरोसे ने बताया जब मेरे हाथ से ट्रेन का डंडा छटा, मुझे इतना पता है कि प्लेट फार्म के नीचे मैं किसी के दोनों हाथों में गिरा, गाड़ी के नीचे आने का मुझे कोई पता नहीं है. उस महात्मा की शक्ल मुझे अच्छी तरह याद है, उस महात्मा की शक्ल अभी जो गये हैं, उनसे मिलती थी, तभी तो मैंने उनके पैर छूने की कोशिश की थी. श्री रामभरोसे बाबा साहब के अनन्य भक्त थे और दरगाह शरीफ आते रहते हैं. वह ऐसे व्यक्ति हैं, सबको अपना समझते हुए सबके हैं. उन्हीं की लिखी कविता की कुछ पंक्तियाँ हैं

"गुरू दीन दयाल हैं, गुरू दीनन के नाथ।

विपत करें संकट हरें, सदा निभाते साथ।।

भूत पिशाच निकट नहीं आंवे

दरगाह हजरत सूफी सुल्तान शाह साहब रहमत की दरगाह पर इटावा शिकोहाबाद के कुछ लोग बैठे थे, रात का समय था. मजीद साहब एक-एक की मुसीबत बाबा साहब को सुनाते और उसे उसका जबाब सुनाते. एक सीधे साधे खुदा परस्त इटावा वाले ने बाबा साहब के सामने कहा, "हुजूर शहर में कुछ लोग भूत पिशाच हटाने के नाम पर गरीबों को खूब लूट रहे हैं. पैसा भी जी भर लेते हैं और काम भी नहीं करते, हुजूर बहुत दु:खी हैं.

बाबा ने मुस्कुराते हुए कहा" देख मुसीवतजदा से तू कुछ मत लेना बस एक अगरबत्ती जलाकर खुदा का नाम लेना सब ठीक हो जायेगा.

हुआ भी ऐसा ही, जहाँ भूत प्रेत का मुसीबत जदा की उसको जानकारी होती. वह जाता अगरबत्ती अपनी जेब से निकाल जलाकर बैठ जाता, मन ही मन खुदा का नाम लेता. दो-चार मिनट में बीमार ठीक से बात करने लगता. अगर कोई कुछ देना चाहता, वह साफ इनकार कर देता. किसी के घर का पानी भी नहीं पीता था.

चार माह तो उसने जैसे तैसे काटे. एक रात उसने आकर बाबा साहब से मांफी मांगी और कहा मुझसे यह काम अब नहीं होगा और अपने काम धंधे में लग गया.

डाकुओं से छुड़ाया

बहुत साल पहले श्री बाबूराम अग्रवाल शिकोहाबाद रेलवे में ठेकेदार थे, इसलिए उस समय के रहीसों में उनका नाम था. चंबल के डाकुओं को ऐसे ही रहीसों की तलाश तो रहती है. उन्होंने घात लगाकर लड़के राजेश को उठा लिया. बेचारे ठेकेदार के तो होश उड़ गये. पुलिस से तो कोई उम्मीद नहीं थी कि वह कुछ कर सके क्यों कि उन दिनों पुलिस परभी चम्बल के डाकुओं का डर सवार था. ठेकेदार साहब के पास डाकुओं ने 30000/- रु. की फिरौती की मांग भेजी. ठेकेदार साहबमारे-मारे फिर रह थे, कि किसी तरह रकम जमाकर भिजवायें, बड़ी मेहनत और भाग दौड़ के बाद 20000/-

रू. जमा कर पाये. रुपये लेकर वह बिचौलिया के पास गये रु. देकर उन्होंने अपनी मजबूरी दिखाई कि इस रकम को भी बड़ी मुश्किल से जमा कर पाये हैं. इतने में ही छुटकारा करा दो, परन्तु बिचौलिया ने डाकुओं से बात कर बताया कि 30000/- रु. से कम में बात नहीं बनेगी. ठेकेदार विचारे 20000/रु. उनके पास जमा कर वापस लौट आए, घर में मातम का माहौल हो गया किसी ने उन्हें छेंकुर वाले बाबा साहब के बारे में बताया.

दौड़े-दौड़े दरगाह सूफी सुल्तान शाह साहब की दरगाह गए, वहां अब्दुल मजीद से मुलाकात हुई, रोते-रोते सब हालात सुनाये. अब्दुल मजीद ने बाबा साहब से उस ठेकेदार साहब का दुखड़ा सुनाया. बाबा साहब ने कहा"अचछा कह दो चिन्ता न करें. मजीद मियां ने बाबा साहब का जबाब उनको सुनाया. डूबते को तिनके का सहारा होता है. कुछ हिम्मत बंधी. घर लौटकर सब घरवालो को हाल सुनाया. दूसरे दिन लडकें को पुलिस लेकर घर आ गयी. बिचौलिए को उस रात को किसी बुजुर्ग ने कहा कि रकम वापस कर दो वरना ठीक नही होगा, उससे पूरे रुपए.20,000 वापस लौटा दिए. क्योंकि लड़के को पुलिस ने छुड़ाया था, डाकुओं ने नही छोड़ा था. वह लड़का टुंडला ने अपना प्राइवेट स्कूल चला रहा है.

फांसी से बचाया

गोवरर्धन शुक्ल ग्वालियर स्टेट की सरकार में नौकर थे, चंबल नदी के उदी चौकी पर नदी पार करने वालों से टैक्स लेने की उनकी ड्यूटी थी, ड्यूटी चौबीस घण्टे की थी, ड्यूटी जोखिम भरी थी, क्योंकि इलाका डाकुओं का था, कोई डाकू कुछ भी कर सकता था, उस खतरे को देखते हुए सरकार ने उन्हें एक बंदूक दे रखी थी. शुक्ल जी भगवान के भक्त और शरीफ इंसान थे. ड्यूटी के पक्के, ईमानदार और भले मानस थे.

गर्मी का मौसम था, चारों तरफ धूप थी, शुक्ला जी अपनी चौकी में पेड़ की छाया में चारपाई पर खाना खाकर लेटे ही थे कि पानी में किसी के उतरने की आवाज आई. शुक्ला जी ने उसे रुकने को कहा और टैक्स मांगा उसने गाली देकर कहा, बुढ़ऊ बैठे रहो वहीं, शुक्ला जी को गुस्सा तो आया पर शांत स्वर से बोले, "टेक्स तो देना चाहिए, मेरी नौकरी का सवाल है, उसने फिर गाली दी और आगे बढ़ने लगा.

अब शुक्ला जी गुस्से पर काबू नहीं पा सके और चौकी में रखी बंदूक उठा ली और ललकारते हुए रुकने को कहा मगर वह नहीं रुका शुक्ला जी ने गोली चला दी, गोली उसके पेट में लगी और वह वहीं ढेर हो गया.

शुक्ला जी को पुलिस ने अरेस्ट कर जेल भेज दिया. कत्ल का मुकदमा चलने लगा. बात दरवारे बाबा छेंकुर वाले में पहुँची. बाबा साहब ने सीताराम मिश्रा को बुलाकर कहा जाकर उससे सही वाक्या पूछो, वह तुम्हारे रिश्तेदार हैं.

सीताराम ने आकर बताया कि,"खून तो किया है, पर छूट जाना चाहिए" बाबा साहब ने सिर्फ इतना कहा "देखता हूँ क्या हो सकताहै. बाबा के करम से जमानत तो हो गई, जब तक मुकदमा चला तब तक चिन्ता तो रही पर आखिर फैसला शुक्ला जी के हक में हुआ और बरी हो गये.

थोड़े दिनों बाद बेकारी के दिनों की पूरी तनख्वाह भी मिल गई.

दवा से दुआ अच्छी

मुहम्मद रफीक टुंडला रेलवे में मुजलिम हैं. यह इनकी बीबी (मुन्नी देवी) बाबा साहब के मानने वाले तो हैं ही, इनके पिता, सास-ससुर सब बाबा साहब के यहां वर्षों से आते रहे हैं. आज कल रफीक मियां लोको कॉलोनी ब्लॉक नंबर 187 क्वाटर्स ए टुंडला में रह रहें हैं कुछ समय पहले वह बीमार पद गये टुंडला अस्पताल ने दिल्ली रेलवे अस्पताल को मुहम्मद रफीक टुंडला रेलवे में मुजालिम हैं. यह इनकी बीबी (मुन्नी देवी) बाबा मुहम्मद मानने वाले तो हैं ही, इनके पिता, सास ससुर सब बाबा साहब के यहाँ वर्षों से आते रहें हैं.

आज कल रफीक मियां लोको कालोनी ब्लॉक नम्बर 187 क्वॉटर ए टूण्डला में रह रहें हैं. कुछ समय पहले वह बीमार पड़ गये टूण्डला अस्पताल ने दिल्ली रेलवे अस्पताल को रेफर कर दिया, वहाँ तमाम टेस्ट हुए और उनके गुर्दे खराब बताये गये और उनको ऑल इण्डिया मेडिकल इन्स्टीट्यूट नई दिल्ली भेज दिया गया.

इन्ही दिनों इनकी बीबी ने बाबा साहब के यहाँ अपनी अर्जी लगा दी. रफीक मियां ने साहब पर पूरा यकीन रखते हुए दवा बगैरा खाना बन्द कर दिया परन्तु यह बात बीबी या किसी को नहीं बताई. अस्पताल के टेस्टों में गुर्दे बिल्कुल खराब दिखते. पन्द्रह दिन जब फिर टेस्ट हुए तो गुर्दे ठीक ठाक काम कर रहे मिले.

दो दिन फिर टेस्ट हुए पर कोई जी नहीं यह बाबा बादशाह मियां छेंकुर वाले बाबा के रहमों करम की यादगार बातें मिली रफीक साहब की छुट्टी अस्पताल वालों ने कर दी बाबा छेकुर वाले का ऐसा इलाज चला, अब रफीक साहब अपना हाल खुद सुनाते हैं.

जो बात दवा से नहीं होती, वह बात दुआ से होती है। जब काबिल मुर्शीद मिलते हैं, तो बात खुदा से होती है.

गुमशुदा को बुलाया

बाबा की दरगाह पर आने वालों को ही नहीं दूर दराज से अनजान लोगों पर भी बाबा छेकुर वाले की रहमत बरसती रहती है.

एक गाँव के एक नौकर पेशा नौजवान कहीं गायब हो गया. बाबा ने उस परिवार को रोते देखा और उसके पिता को बुलाकर कहा "उस लड़के का कोई कपड़ा छेंकुर वाले बाबा की आस्ताने पर जमीन में गाड़ दो जब वह लड़का घर वापस आ जाये तो उस कपड़े को लाकर जला देना.

बाबा तो कहकर चले गये और उन लोगों ने चुपचाप जाकर कपड़ा जमीन में गाड़ दिया. चौथे दिन लड़का वापस आ गया, उन्होंने आकर कपड़ा खोदा. दरगाह पर मौजूद श्री सिलेटी सिंह, श्री चेतन्य स्वरूप ने कुछ खोदते देख पूछा तो उन्होंने बाबा साहब के करम का हाल सुनाया और चादर चढ़ाई.

हाई टेंशन वाले तार छूने पर भी मौत न लेजा सकी

हाई टेंशन वाले तार छूने पर भी मौत न लेजा सकी

मार्च 2003 में दरगाह शरीफ पर कुछ काम था, चैतन्य स्वरूप बाजपेई करा रहे थे। जिस एक हॉल में लेंटर भी पड़ना था लोहे के सरिया बगैरह के काम के लिए नौशहरा के श्री जगदीश को बुलाया गया, जब उससे उस काम के लिए रेट पूछी गई तो कहा जो देंगे ले लेंगे।

काम खत्म होने पर जब उससे पूछा गया क्या दे दें? उसने फिर वही जबाब दिया। श्री चैतन्य स्वरूप ने उसे जेब से निकालकर एक रुपया दे दिया उसने सर से लगाकर जेब में रख

गुमशुदा को बुलाया

बाबा की दरगाह पर आने वालों को ही नहीं दूर दराज से अनजान लोगों पर भी बाबा छेकुर वाले की रहमत बरसती रहती है.

एक गाँव के एक नौकर पेशा नौजवान कहीं गायब हो गया. बाबा ने उस परिवार को रोते देखा और उसके पिता को बुलाकर कहा "उस लड़के का कोई कपड़ा छेंकुर वाले बाबा की आस्ताने पर जमीन में गाड़ दो जब वह लड़का घर वापस आ जाये तो उस कपड़े को लाकर जला देना. बाबा तो कहकर चले गये और उन लोगों ने चुपचाप जाकर कपड़ा जमीन में गाड़ दिया. चौथे दिन लड़का वापस आ गया, उन्होंने आकर कपड़ा खोदा. दरगाह पर मौजूद श्री सिलेटी सिंह, श्री चेतन्य स्वरूप ने कुछ खोदते देख पूछा तो उन्होंने बाबा साहब के करम का हाल सुनाया और चादर चढ़ाई. हाई टेंसन वाले तार छूने पर भी मौत न लेजा सकी

मार्च 2003 में दरगाह शरीफ पर कुछ काम था, चैतन्य स्वरुप बाजपेयी करा रहें थे. जिस एक हॉल में लैटर भी पड़ना था लोहे के सरिया वगेरह के कम के लिए नौशहरा के श्री जगदीश को बुलाया गया, जब उससे उस कम के लिए रेट पूछी गई तो कहा जो देंगे ले लेंगे.

काम खत्म होने पर जब उससे पूछा गया क्या दे दे? उसने फिर वही जवाब दिया. श्री चैतन्य स्वरुप ने उसे जेब से निकालकर एक रुपए दे दिया उसने सर से लगाकर जेब में रख लिया और नमस्ते कर चल पड़ा, अब चैतन्य स्वरूप ने फौरन उसे बुलाया और कहा एकर तो मैंने तुम्हें यह देखने के लिए दिया था कि देखें यह क्या कहता है. फिर उसे एक हजार रुपये चाय पिला विदा किया.

दूसरे दिन शाम वह फिर आया और दरगाह शरीफ में हजरत सूफी सुल्तान साह चादर व यकीदत के फल चढाये और फिर बताया कि एक गांव में एक मकान की छत लोहे का काम उसका नौकर कर रहा था. उस बिल्डिंग के ऊपर से हाई बिजली की लाईन जा रही थी, नौकर ने जैसे ही दस फीट लम्बा सरिया ऊपर की ओर खड़ा किया कि तार सरिये छू गया एक जबरदस्त धमाका हआ. चिनगारियाँ निकली और सरिया समेत वह नौकर और औंधे मुंह नीचे आ गिरा. जगदीश की चीख निकल गई भीड़ जमा हो गई, जगदीश रो-रोकर यही कह रहा था, बाबा आपके यहाँ काम के हजार रुपये ले लिये, यह सजा मिली. मैं कहीं कान रहूँगा या मौला इसका इतना खर्च मैं कहाँ से पूरा करुंगा. इस मजदूर को मौत का मुआवजा मुकदमे का खर्च कहाँ से आयेगा, रोते-रोते निढाल हो गया तब तक हिम्मत कर उस मजदूर के हाथ से किसी ने वह सरिया खींचा. इस खींचा-खींची में मजदूर को होश आ गया. उसे लोगों ने उठा कर बैठाया उधर जगदीश को सम्भाला और बताया कि वह जिंदा है वह था, बाबा का करम.

रोशनी हो गर बाबा को मंजूर, आंधियों में चिराग जलते हैं.

ए.के. बाजपेई

तुम को देखा नहीं महसूस किया है मैंने,

आ किसी दिन मेरे अहसास को पैकर कर दे।

बचपन से ताऊ जी श्री आनन्द स्वरूप जी व बाप के साथ दरगाह शरीफ की चौखट पर मत्था टेकते-टेकते बड़े हुए ए.के. बाजपेई अकसर यह शेर सुना देते हैं. बाबा साहब की नजरें इनायत उन पर हैं हर मुसीबत से बाबा उन्हें उबार लेते हैं. कभी कभार थोड़ी सी बात हुई हो आंखें खुली हो या बंद दीदार उनका होता है, वाली बात सच है.

बाबा साहब ने उनको थोड़े समय में ही राजनीति क्षेत्र में ऊँची सीढ़ी पर पहुँचा दिया, वह ऑल इण्डिया सेक्रेटरी हैं और बाबा साहब की नजरें इनायत यहीं नहीं रुकी उनको वकालत के क्षेत्र में हाई कोर्ट का अच्छे वकीलों की कतार में खड़ा कर दिया. आर्थिक रूप में सालों का सफर महीनों में तय कर लिया. पता नहीं ए.के. बाजपेई में हजूर बाबा साहब ने क्या खूबी देखी. कहते हैं "जिसे पिया चाहे वही सुहागन"

दिल समर्पण

गले लगा के जो सुनते थे दिल की आहों को,

तरस रहा हूँ उनकी हसीन बाहों को.

रहबर और सरपरस्त की की भमिक

जो इस छोटी सी किताब के रूप में आपके सामने है, वह मैं उन दो महानुभावों को समर्पित कर रहा हूँ जो मुझे इस मुकाम तक लाए. जो मेरे भाई,पिता और मित्र सब कुछ थे.

श्री आनंद स्वरूप बाजपेई जो थे मेरे बड़े भाई पर उन्होंने पिता, बड़े भाई,दोस्त रहबर और सरपरस्त की की भूमिका निभाई. उनकी वजह से ही मैं व मेरा परिवार आज सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं. उनके कारण ही बाबा साहब की हम सब पर कृपा दृष्टि है.

बाबा साहब की नजरें इनायतें सदा उन पर रहीं. बाबा साहब ने कभी उनकी बात नहीं टाली.बाबा साहब का करम देखिए कि आनन्द स्वरूप के अन्तिम समय बाबा साहब ने सीताराम के हाथों उनके शरीर पर डालने के लिए अपना नवाज पढ़ने का आसन (पैरहन) भेजा, इतना मान सम्मान किसी और को नहीं दिया.

श्री सीताराम मिश्रा जो मेरे बचपन के दोस्त थे, हम दोनों साथ-साथ पढ़े बड़े हुए. वह मेरे भाई दोस्त, हमसफर और सबकुछ थे, उनके कारण ही मेरी पढ़ाई दसवीं क्लास से आगे बढ़ सकी. मैं दसवीं में फेल हो गया रिजल्ट अखबारों में निकल आया. मैं हताश होकर बडे

भाई श्री आनन्द स्वरूप के पास दिल्ली आ गया और आगे पढ़ने का विचार छोड़ काम की तलाश में लग गया.

उधर सीताराम ने बाबा साहब से मुझे पास कराने की प्रार्थना की तो बाबा साहब ने कहा,"अब क्या हो सकता है" नतीजा अखबारों तक में छप चुका है" सीताराम जिद पर बैठे और खाना पीना छोड़ दिया, दूसरे दिन अब्दुल मजीद खबर लाये कि बाबा याहब ने कहा है कि "देखो देखता हूँ कि क्या हो सकता है" यह सुन सीताराम को यकीन हो गया कि काम बन जायेगा और उन्होंने खाना खाया.

दो माह बाद मेरे पास बोर्ड का पत्र आया कि मझे पास कर दिया गया है यह खबर अखबारों में भी छपी. अब तक बाबा साहब की कृपा मुझ पर है.

यह किताब इन दो महानुभावों को सादर समर्पित है.

गुरुवर दीनदयाल है, गुरुवर दीनन के नाथ,

विपत्ति परे संकट हरे, सदा निभाए साथ,

समझ में आयेगा इमदाद कैसे होती है,

तड़प के पुकारों तो या बाबा साहब..

1970 के बाद अब तक

5 मई 1970 हर रोज शाम की तरह श्री बाबा साहब के कमरे के सामने बातचीत कर रहे थे, मजीद साहब बाबा साहब भीतर थे. मजीद साहब ने मेहताब सिंहसे कहा- बाबा साहब कह रहे हैं कि तुम आज रात यहाँ ही रुको, कुछ जरूरी काम है. मेहताब सिंह ने हाँ कह दी. मजीद साहब भीतर गए और फिर बाहर आकर कहा- आज इतना सबकी हो गई अब सब आराम करो. जिसको जाना था चले गये जो रुके वह अपनी अपनी जगह पर लेट गए.

सुबह रोज की तरह बाबा साहब को चाय भीतर गई, थोड़ी देर बाद मजीद साहब बाहर आए और बोले- "मैं पेशाब करने जा रहा हूँ"वह पेशाब कर वापस अपनी चारपाई पर बैठ कर बोले- "बाबा साहब ने महताब सिंह तुमसे कहा है जिस काम के लिए तुम्हें रोका है तारे अब तुम संभालो" इतना कहकर मजीद साहब चारपाई पर गिर पड़े, जो लोग वहां थे, उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ कि एकाएक गिर क्यों गये. देखा तो उनकी सांस बन्द! आश्चर्य एकाएक ऐसा क्या हो गया न कोई बीमारी न कोई तकलीफ,सबकी आँखों में आँसू. सुबह सबको खबर की गई इटावा भी खबर भेजी गई कमेटी के लोगों को भी खबर दी गई दोपहर तक सब आ गये सरदार जी ने सबको सब हाल बताया दरगाह कमेंटी ने एक से उनके लिए

जगह तय की और शाम को श्री बाबा साहब के कमरे के बगल में उन्हें जगह दी गई. बाहर से आने वाले उर्स के बाद दो-तीन दिन तो रुकते ही हैं, हम दिल्ली वाले भी रुके थे.

सुबह सरदार जी ने सबको बिठाकर आगे के बारे में बात की और फैसला किया कि श्री अब्दुल सलीम को दरगाह शरीफ का मुतवल्ली बनाया जाए, श्री सलीम बचपन से अपने पिता के साथ रहा और दरगाह के कामों में दिलचस्पी लेता था उसे बड़ा होने पर श्री विशम्भर नाथ ने हिंद लैंप कम्पनी में नौकरी लगवा दी,

उसने फ़ौरन नौकरी छोड़ श्री सूफी साहब व श्री बाबा साहब को सजदा किया और सारी जिम्मेदारी सम्भाल ली, सरदार जी ने इसकी मदद को श्री विशम्भर नाथ, महताब सिंह, प्रताप सिंह, श्री वीरेन्द्र सिंह, चन्दन सिंह और श्री प्रीतम सिंह को कहा और धीरे-धीरे दरगाह शरीफ का इंतजाम पहले की तरह चल निकला.

पहले दिनों में और अब में फर्क इतना ही था कि पहले श्री बाबा साहब की महफिल लगती थी लोग अपनी मुसीबत उन्हें कहते और वह उसी समय मजीद साहब से उसका जबाव कहला देते थे, हर व्यक्ति की समस्या का हल उसे उसी समय मालूम हो जाता था, जो श्री सूफी साहब से अपनी समस्या कहते वह उसका हल करते, इस तरह इस दरगाह पर दो जगह पर लोगों की मुरादें पूरी होती, अब भी यही होता है.

श्री मजीद साहब के जाने के बाद बाबा साहब की महफिल अब नहीं लगती है.

पर अब पहले से ज्यादा लोगों की मदद करम श्री सूफी साहब और बाबा साहब कर रहे हैं, इसका सीधा सबूत दरगाह शरीफ पर आने वालों को संख्या है.

2005 में श्री सरदार उजागर सिंह के स्वर्गवास के बाद सालाना उर्स और प्रोग्रामों की जिम्मेदारी श्री चेतन्य स्वरूप बाजपेयी (दिल्ली) और श्री प्रीतम सिंह ने संभाली है. सरदार ने दरगाह कमेटी बनाई थी. श्री चेतन्य स्वरूप ने यहाँ की इमारतों, मेन गेट, बाउंड्री, कमरे फर्स, छतों आदि का काम बड़ी मेहनत से कराया. इसकीजितनी प्रसंशा की जाए वह कम है.

यह चैतन्य स्वरूप उन्हीं आनंद स्वरुप के लडके हैं जिनके स्वर्गवास के समय श्री बाबा साहब ने अपनी नवाज पढ़ने का आसान (पैरहन) श्री सीताराम के द्वारा उनके शरीर पर डालने को भेजा था, इतना सम्मान अभी तक किसी को नही मिला है.

श्री सुफी सुल्तान साह साहब रहमतुल्ला व बाबा साहब छैकुर वाले के रहमों करम से दरगाह दिन दूनी तरक्की करता गया.

2005 को सरदार उजागर सिंह स्वर्ग पधार गये दरगाह कमेटी ने मिलकर उनके लिए तय की और उनको भी मजीद मियां के बगल में हमेशा के लिए लिटा दिया. दरगाह शरीफ का जिम्मा अब पूरी तरह अब्दुल सलीम पर आ गया उनकी मदद के लिए तो बहुत लोग और श्री सलीम खां बड़ी लगन से दरगाह को चला रहे हैं. जिनमें चेतन्य स्वरूप बाजपेई,श्री प्रीतम सिंह, श्री विजेन्द्र सिंह आदि खास हैं.

श्री सूफी साहब व श्री बाबा साहब की कृपा से दिन रात चौगुनी तरक्की होती गई. आज-कल कमेटी में यह लोग हैं, यह सब दिल जान से काम कर रहे हैं -

1.रवी कमार 2. गौरव बैजल 3. चन्दन सिंह 4. किताब सिंह 5. चुन्नी लाल अरोड़ा 6. बंगाली बाबू7. हरीश गांधी 8. भोलानाथ बाथम 9. सुरेश चन्द्र जैन 10. प्रीतम सिंह 11. रामनरेश यादव 12. रामबाबू 13. रामदत्त शर्मा 14. रमेश चन्द्र 15. आफताब खान 16. ए.के. बाजपेई (एडवोकेट हाईकोर्ट दिल्ली) 17. आर.पी. सिंह 18. कमलेश बाबू यादव 19. अलताफ खान 20. ओमप्रकाश यादव 21. संजय कुमार आहूजा 22. अतुल कुमार मिश्रा (दिल्ली) 23. अशोक कुमार शर्मा 24. अशोक कुमार गोयल 25. वीरेन्द्र सिंह 26. अशोक कुमार यादव (दिल्ली पुलिस) 27. नीरज यादव 28. रामवीर सिंह यादव 29. नन्दू बैजल 30. ठा. बलराम सिंह 31. राधेश्याम फौजी 32. आशाराम

आज कल श्री सूफी साहब की दरगाह व छैकर वाले बाबा का कमरा पास के तमाम जिलों में मशहूर है. सालाना उर्स पर इतनी जनता जियारत करने आती है कि जगह कम पड़ जाती है. सन 2012 से मुतवल्ली श्री सलीम खां ने श्री मुकेश गुप्ता की मदद से हर वीरवार को दरगाह पर आने वालों के लिए लंगर शुरू किया है, जो बड़ी सफलता से चल रहा है.

श्री सूफी साहब और बाबा साहब कैसे मुसीबत में मदद करते हैं, इसका एक वाक्या पिछले महीने का है श्री अशोक कुमार जो स्वर्गवासी रामलखन के भाई हैं आज-कल दिल्ली पुलिस में इन्सपैक्टर हैं, बचपन से अपने पिता और भाई के साथ दरगाह जाया करते थे.

जब पुलिस की नौकरी के लिए दिल्ली आये तो इंटरव्यू में बाबा साहब ने उनकी इतनी इतनी मदद की कि वह बिना दिक्कत इंटरव्यू में पास हो गए. श्री स्वर्गवासी रामलखन ने उन्हें कब्बाली की तरफ ध्यान देने की सलाह दी थी और उस मामले में इतने कामयाब हुए कि आज कल दरगाह शरीफ के शाही कब्बल हैं.

श्री अशोक यादव किसी शादी में शिकोहाबाद के लिए रवाना हुए आगरा उन्होंने एक बस ली और वह बस की पिछली सीट पर बैठ गये. उस बस में चार पुलिस वाले दो मुलजिमों को लेकर आ बैठे. बस चली शिकोहाबाद से थोड़ी दूरी पर पहुँची दो मोटर साइकिल ने बस रोकी

हाथों में पिस्टल लिए तीन लोग चढ़ आये और चारों पुलिसवालोंको गोली मार दी और उनकी जेब से चाबी निकाल उन दोनों मुलजिमों की हथकड़ीखोली अशोक यादव ने अपनी बंदूक सम्भाली और उठने लगे तो एक ने जोर से कहा तुम चुपचाप बैठे रहो, हम तुम से कुछ नहीं कहेंगे, उन्होंने उन दोनों मुल्जिमों को गाड़ी से नीचे उतारा और खुद भी उतर गये.

इस तरह उन लोगों की गोलियों से बाबा साहब ने अशोक यादव को बचाया. कभी डाकू किसी बन्दुक वाले आदमी को जिन्दा नहीं छोड़ते हैं, उसे मारकर बंदूक पर कब्जा करते हैं, पर उन सब डाकओं के दिलों पर तो श्री बाबा साहब का कब्जा था. इस तरह शाही कब्बाल को श्री बाबा साहब ने बचा लिया.

पता नहीं श्री सूफी सुल्तान शाह साहब व बाबा साहब (श्री छैकुर वाले) रोज कितनों पर नजरें इनायत करते हैं.

मेरे स्वर्गीय पिता जी भी इस दरगाह पर काफी समय तक रहे. उन पर श्री बाबा साहस की इतनी कृपा हुई थी कि वह जिस किसी को की देते पूरी होती थी. श्री सूफी साहब व श्री बाबा साहब ने हमें इतना दिया जो दामन में हमारे समा न सका.

मेरे दोनों लड़के ए.के वाजपेई और श्री मुकेश वाजपेई सतयुग काल के लड़कों की तरह हैं. उनकी वजह से परिवार सुख शान्ति से जीवन निरवाह कर रहा है.

मेरी चौथी पीढ़ी भी इसी दरगाह की व बाबा साहब की मुरीद है.

पी.डी. वाजपेई सेक्टर 19ए, मकान नं. 190,

नौएडा (यूपी)

अपनी बात

मेरी आदत रही है मैं जो भी चीज सुनता या कही, और मुझे पसंद आती है और जो मेरे मालिक श्री बाबा से ताल्लुक होता बादशाह बाबा से तो मैं उसे अपनी डायरीमें लिख लेता हूँ. बहुत दिनों से मन में विचार आ रहा था कि जो मैं लिखता हूँ शायद किसी और को भी पसन्द आये तो क्यों न इनको एक किताब के रूप में छपवा दिया जाये.

जब मैंने विचार अपने भतीजे श्री चेतन्य स्वरूप वाजपेई को जो एक जाने माने कवि व रचनाकार हैं को और श्री ए.के. वाजपेई को बताया तो उन्हें बहत पसन्द आया.

उन्होंने इस कार्य को पूरा करने में पूरी मदद की और मेरा उत्साह बढ़ाया, यदि किसी को इस किताब में लिखी कोई चीज पसन्द आती है तो मैं अपने को धन्य मानूंगा कि मेरी पसन्द औरों को भी पसन्द है.

दरगाह सूफी सुल्तान शाह साहब के शाही कब्बल अशोक यादव को भी इस किताब की हस्त लिखित दिखाई तो वह कुछ चीजें पढ़कर वाह-वाह करने लगे और मेरा मन खुशी से झूमने लगा कि अब तो यह औरों को पसन्द आयेगी.

प्रभू दयाल बाजपेयी
40/3, ईस्ट किदवई नगर

नई दिल्ली

समर्पित

यह कुछ लाइनें जो मुझे अपने मालिक श्री बाबा साहब बादशाह बाबा के बारे में मिली इस रूप में आप सबके सामने रख यह अपने मालिक बाबा साहब की को जिनकी कृपा से अच्छी जिन्दगी जी रहा हूँकोसमर्पित है.

उन्होंने मुझे सतयुग के समय जैसा पुत्र दिया उस जैसा पुत्र आजकल मिलना असम्भव है. मेरे बड़े भाई श्री आनन्द स्वरूपजी ने मेरे पुत्रों ए.के.बाजपेई, मुकेश बाजपेई को ऐसे संस्कार दिएजैसेसतयुग के पुत्रों में भी कम होंगे. यह किताब उन्हें समर्पित है.

खुदा है महरवां उस पर
जिस पर महरवां आप हो
तेरे करम की बाबा कुछ इन्तहा नहीं
अब अपना तेरे सिवा कोई आसरा नहीं
जिस जन पर तेरी कृपा सोदुःख कैसे पावे.
वह यकीन सुनेंगे सदाये मेरी
क्या तुम्हारा खुदा है हमारा नहीं
न तेरे सिवा कोई और था न
तेरे सिवा कोई और है
ऐसा हसीन खुदा की कसम कोई नहीं
जैसा मेरा सनम है किसी और का नहीं
साहिब आलम सदेर जमाना
हाथ है खाली बांटे खजाना
जबसे पकड़ा हैदस्ते हिना को मैंने
जिस चीज को छूता हूँ महक जाती है.
अन्धा देखें लगड़ा भागे गूंगा गाना गाये.
दीवाना बना इक बार दिदार देदे
तू नहीं तो यह जिन्दगी कुछ भी नहीं
यह दिवानगी कुछ भी नहीं
आप जिसके करीब होते हैं
वह बड़े खुशनसीब होते हैं
मेरा मिलना औ आपसे मिलना
आप किसको नसीब होते हैं.

दे वह निगाह जो देख पाये तुझ को
या आके खुद को दिखाजा मुझ को
रात यो दिल में तेरी याद आई

जैसे वीराने में चुपके से बहार आई
जिस ने बाबा का नाम यकीदत से ले लिया
हर जगह मौजूद है
मगर नजर आता नहीं है
बेखुदी में उम्र मैंने अकेले काट ली
तब लगा कोई न कोई महरबा मेरा भी था.
कई बार ऐसा धोका हुआ है
चले आ रहे हैं वो नजरें झुकाये
उनसे यों भी मुलाकात होती रही
कोई बोला नहीं ओर बात होती रही
और कोई रास्ता नहीं दोस्तों
बाबा से मिली गर खुदा चाहिए

तुम्हरे दर की मिट्टी शान कर माथे पर मलता हूँ
मरम्मत कर रहा हूँ फूट मुकद्दर की
वह दिल की क्या तो तेरे मिलने की दुआ न करे
मैं तुझको भूलकर जिन्दा रहूँ खुदा न करे
रहेगा तेरा साथ जिंदगी बनकर
यह और बात है जिन्दगी वफा न करे.
मुझे सूली पर चढ़ाने की जरूरत क्या है,
मुझे से करम छीन लो खुद ही मर लाऊंगा मैं.
मिलने को वो मिले हैं पर बनके अजनबी
कुछ ऐसे हादसे भी हमें पेश आये हैं.
वक्त रुखसत मुझे कदमों पर मचल जाने दो,
यह तमन्ना तो मेरे दिल की निकल जाने दो।।
न जी भर के देखा न कुछ बात की.
बड़ी आरजू थी मुलाकात की।

औरों को जो कुछ मिला है अपने मुकद्दर से मिला है,
हमें तो मुकद्दर भी तेरे दर से मिला है।
जामों मीना से नहीं हमको सरोकार मगर
आपके नाम पर आलाये तो मस्ती अच्छी
दरवाजे पे फजल खटखटाये तो सही
मुंह मांगी मुरादों से भरूंगा दामन
मगर मेरे दर पैआये तो सही.
और इससे बढ़कर तेरे करम की इन्तहा क्या होगी

टटी हुई मुडेर पर छोटा सा इक चिराग
मौसम से कह रहा था आंधी चला के देख
बाबा का सहारा है
जब कड़ी धूप की शिद्दत ने सताया मुझको
याद बहुत आया बाबा का साया मुझको
वो हम बांधे मोह पांस,हम प्रेम बंधन तुम बांधे
अपन छुटन को जतन करो, हम छूट तुम्हें आराधे.
तेरी याद को सूरज चमका
नींद न आई सारी रात
शाम ढलें तेरी यादों के फूल
बदन में चुभते हैं
मुझे सहज हो गई जिन्दगी
हवा के रुख बदल गये
तेरा हाथ में हाथ आ गया
कि चिराग रात में जल गये
दिल फिराक में दिल अश्क बार रहता है

अब इन्तजार की घड़िया मेरी मिटा जाओ

मेरे मालिक मेरे दिल नवाज आ जाओ
सजा येदी कि नींद छीन ली आंखों की
खता ये थी कि उनको देखा तस्वुर में
मेरी मजबूरियों को ध्यान में रख
देखकर तुझे अब किसे देखू
मांग कर तुझसे खुशी लूं, मुझे मंजूर नहीं
किसका मांगी हुई दौलत से भला होता है.
दिल को है तेरी ही तमन्ना दिल को तुझसे ही प्यार
चाहे तू आये न आये हम करेंगे इन्तजार

मुद्दतें हो गई ख्वाब सुहाना देखे
जागता रहता है उम्मीद में तुझे चाहने वाला.
बाबा जी ऐसे अहसास का नाम है
कि सामने रहे और दिखाई न दें.
कभी यूँ भी आ मेरी आंख में कि मेरी नजर को खराबन हो
मुझे एक रात नवाज दे मगर उसके बाद शहर न हो
वो डराते हैं खुदा से मुझे
जैसे मेरा कोई खुदा ही नहीं
मेरा आपकी कृपा से हर काम हो रहा है
करते हो तुम हुजूर (बाबा सा.) मेरा नाम हो रहा है
मरता जी उठे अगर वह देख ले इकबार
ऐसा करम करने वाला इस जहां में कोई कहीं नहीं
तेरी बन्दगी से बन्दा बना हूँ
तुम्हीं ने तो जीने के काबिल किया है
खुलता नहीं दिल बन्द ही रहता है हमेशा
क्या जाने कि आ जाते हैं आप इसमें किधर से
निगाहे शौक को है जाजू तेरी, तस्वर में तझे देखं जियारत है यही मेरी

तू कर कर्म कि मैं अक्सीर ही जाऊ

तेरी तस्वीर को देखूं टीई तस्वीर हो जाऊ

फूट जाए ये आंखे गर किसी को देखे

इन आँखों ने तुम्हें देखा है तुम्हें ही उमर भर देंखे

सुनते है कि मिल जाती है हर चीज दुआ से

इक रोज तुझे मांग के देखेंगे खुदा से

सनम का सजदा नमाज होगी,

सनम के घर का तवाफ हज है

सनम के बंदे हैं हम तो

सनम ही दिलबर सनम ही खुदा हैजो पहिरावे सोई पहिरु, जोदे सो खाऊ

जहां बिठावे तित ही बैठू, बेचे तो बिक जाऊ